Resource: Gateway Simplified Text (Hindi)

License Information

Gateway Simplified Text (Hindi) (Hindi) is based on: Gateway Simplified Text (Hindi), unfoldingWord, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Gateway Simplified Text (Hindi)

Mark 1:1

1 यीशु मसीह जो परमेश्वर का पुत्र है, यह उसके विषय में शुभ संदेश का आरम्भ है।

2 इस शुभ संदेश का आरम्भ वैसे ही होता है जैसा होने के विषय में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने तब कहा था जब उसने बहुत समय पहले लिखा था, "देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे-आगे भेज रहा हूँ। वह तेरे आगमन के समय के लिए लोगों को तैयार करेगा।

3 वह उसे सुनने वाले लोगों के लिए उजाड़ स्थान में पुकारने वाले की वाणी होगा, जो कहेगा, 'प्रभु का स्वागत करने के लिए स्वयं को तैयार करो। उसके आगमन के लिए प्रत्येक वस्तु को व्यवस्थित करो।'"

4 जिस दूत के विषय में यशायाह ने लिखा था वह यूहन्ना ही था। लोग उसे "बपतिस्मा देने वाला" कहते थे। यूहन्ना यरदन नदी के निकट एक उजाड़ क्षेत्र में रहता था। वह लोगों को बपतिस्मा देकर उन पर यह घोषणा कर रहा था कि यदि वे पश्चाताप करते हैं, तो वह उन्हें बपतिस्मा देगा, और परमेश्वर उनके पापों को क्षमा कर देगा।

5 बड़ी संख्या में यहूदिया प्रदेश और यरूशलेम नगर के लोग यूहन्ना की बातें सुनने के लिए जंगल में चले गए। उसे सुनने वाले लोगों में से बहुत से इस बात से सहमत थे कि उन्होंने पाप किया है। तब यूहन्ना ने उन्हें यरदन नदी में बपतिस्मा दिया।

6 यूहन्ना ऊँट के बालों से बने वस्त्र पहनता था और कमर में चमड़े का पटुका बांधता था। जो टिड्डे और शहद उस उजाड़ क्षेत्र में उसे मिले उसने वही खाए।

7 वह प्रचार करता था, "अति शीघ्र ही वह आएगा जो बड़ा महान है। उसकी तुलना में मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं तो इस योग्य भी नहीं कि झुककर उसके जूतों का फीता खोलूँ।

8 मैंने तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है, परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।"

9 जिस समय यूहन्ना प्रचार कर रहा था, उसी दौरान यीशु गलील प्रदेश के एक नगर नासरत से आया। जहाँ यूहन्ना प्रचार कर रहा था, वह वहाँ गया, और यूहन्ना ने उसे यरदन नदी में बपतिस्मा दिया।

10 जैसे ही यीशु पानी में से ऊपर आया, उसने आकाश को खुलते और परमेश्वर के आत्मा को अपने ऊपर उतरते देखा। परमेश्वर का आत्मा कबूतर के समान आकाश से उतरा।

11 तब परमेश्वर ने आकाश में से बात की और कहा, "तू मेरा पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रेम करता हूँ। मैं तुझसे अति प्रसन्न हूँ।"

12 तब परमेश्वर के आत्मा ने यीशु को उजाड़ क्षेत्र में भेज दिया।

13 यीशु 40 दिनों तक जंगल में रहा। उस समय के दौरान, शैतान उसकी परीक्षा कर रहा था। उस स्थान में वनपशु भी थे, और स्वर्गदूत उसकी देखभाल कर रहे थे।

14 बाद में, राज्यपाल हेरोदेस अंतिपास के यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बंदीगृह में डाल देने के पश्चात, यीशु गलील प्रदेश में गया। गलील में, वह परमेश्वर के शुभ संदेश का प्रचार करने लगा।

15 वह कह रहा था, “अंतिम समय आ गया है। परमेश्वर शीघ्र
ही प्रदर्शित करेगा कि वह राजा है। मन फिराओ और शुभ
संदेश पर विश्वास करो।”

16 एक दिन यीशु ने गलील की झील के किनारे से जाते हुए,
शमौन और उसके भाई, अन्द्रियास नामक दो पुरुषों को
देखा। वे मछलियाँ पकड़ने के लिए अपना जाल झील में डाल
रहे थे। वे मछली पकड़कर और बेचकर धन कमाते थे।

17 तब यीशु ने उनसे कहा, “जैसे तुम मछलियाँ बटोरते रहे हो,
वैसे ही मेरे साथ चलो, और मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि मेरे चेले
बनाने के लिए लोगों को कैसे इकट्ठा किया जाए।”

18 यीशु के यह कहने के पश्चात, तुरन्त ही उन्होंने काम करना
बंद किया, और उसके साथ हो लिए।

19 उनके थोड़ा आगे बढ़ने के पश्चात, यीशु ने याकूब और
उसके भाई यूहन्ना नामक दो और पुरुषों को देखा। वे जब्दी
नामक व्यक्ति के पुत्र थे। वे सब के सब एक नाव में मछली
पकड़ने के जालों को सुधार रहे थे।

20 जैसे ही यीशु ने उन्हें देखा, तो उसने उनसे उसके साथ हो
लेने के लिए कहा। इसलिए वे अपने पिता जब्दी को उसके
सेवकों के साथ नाव में ही छोड़कर यीशु के साथ हो लिए।

21 पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना के साथ यीशु पास ही
के कफरनहूम नगर में गया। वहाँ, सब्त के दिन यीशु यहूदी
सभास्थल में शिक्षा देने लगा।

22 सुनने वाले लोग उसके सिखाने के तरीके से अचम्भित हुए।
उसने एक ऐसे शिक्षक के समान शिक्षा दी जो उन बातों पर
निर्भर करता है जिनको वह स्वयं जानता हो। उसने यहूदी
व्यवस्था सिखाने वाले उन लोगों के समान शिक्षा नहीं दी, जो
उन अलग-अलग बातों को दोहराते थे जो दूसरों ने सिखाई
थीं।

23 यहूदियों के प्रचार स्थान में जहाँ यीशु ने शिक्षा दी, वहाँ एक
मनुष्य था जो दुष्टात्मा के वश में था। वह दुष्टात्मा वाला मनुष्य
चिल्लाने लगा,

24 “हे नासरत के यीशु! हम दुष्टात्माओं को तुझसे कोई लेना-
देना नहीं है! क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं जानती हूँ कि
तू कौन है। तू परमेश्वर की ओर से आया पवित्र जन है!”

25 यीशु ने उस दुष्टात्मा को यह कहकर डाँटा, “चुप रह और
उस मनुष्य में से बाहर निकल जा!”

26 उस दुष्टात्मा ने उस मनुष्य को हिंसक रूप से हिलाया। वह
बहुत ऊँचे स्वर में चीखी, और फिर वह उस मनुष्य में से
निकलकर चली गई।

27 सब लोग जो आराधनालय में थे वे अचम्भित हो गए। जिसके
परिणामस्वरूप, वे आपस में यह कहकर चर्चा करने लगे,
“यह तो कुछ ऐसा है जो हमने पहले कभी नहीं देखा! वह न
केवल एक नयी और अधिकारिक रीति से शिक्षा देता है,
बल्कि वह तो दुष्टात्माओं को भी आदेश देता है, और वे उसकी
बातों का पालन करती हैं!”

28 उन लोगों ने शीघ्र ही सम्पूर्ण गलील प्रदेश में बहुत से अन्य
लोगों को वह बताया जो यीशु ने किया था।

29 जब वे यहूदियों के प्रचार स्थान से निकले, तो याकूब और
यूहन्ना के साथ यीशु, शमौन, और अन्द्रियास सीधे शमौन और
अन्द्रियास के घर गए।

30 शमौन की सास खाट पर इसलिए लेटी हुई थी क्योंकि वह
बीमार थी; अर्थात उसे बुखार था। उसी समय किसी ने यीशु
से उसके बीमार होने के विषय में बताया।

31 यीशु उसके पास गया, और उसका हाथ पकड़कर उठने
में उसकी सहायता की। वह तुरन्त ही बुखार से ठीक हो गई
और उनकी सेवा करने लगी।

32 उसी शाम, सूर्य के अस्त होने के पश्चात, आसपास के क्षेत्र
के लोग यीशु के पास दूसरे कई लोगों को लेकर आए जो
बीमार और दुष्टात्माओं के वश में थे।

33 ऐसा लगता था कि मानो उस नगर में रहने वाले सब लोग
शमौन के घर के द्वार पर इकट्ठा हो गए हों।

34 जो विभिन्न रोगों से बीमार थे उनको यीशु ने चंगा किया। उसने बहुत सी दुष्टात्माओं को भी लोगों में से निकल जाने के लिए विवश किया। उसने दुष्टात्माओं को उसके विषय में लोगों को बताने नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थीं कि वह परमेश्वर की ओर से आया पवित्र जन है।

35 अगली सुबह भोर में जिस समय अंधेरा ही था यीशु उठा। वह घर से निकलकर नगर से दूर एक ऐसे स्थान पर चला गया, जहाँ लोग नहीं थे। तब उसने प्रार्थना की।

36 शमौन और उसके साथियों ने उसकी खोज की।

37 जब वह उन्हें मिल गया तो उन्होंने कहा, "नगर के सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।"

38 यीशु ने उनसे कहा, "हमें इस प्रदेश के अन्य नगरों में जाने की आवश्यकता है ताकि मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ। मैं यहाँ इसी कारण से आया हूँ।"

39 इसलिए वे सम्पूर्ण गलील प्रदेश में गए। जब वे गए, तो यीशु यहूदियों के प्रचार स्थलों में प्रचार करता था और दुष्टात्माओं को लोगों में से बाहर निकलने के लिए विवश करता था।

40 एक दिन एक मनुष्य यीशु के पास आया जिसे कोढ़ नामक एक बुरा चर्मरोग था। वह यीशु के सामने घुटने टिकाकर और यह कहकर गिड़गिड़ाने लगा, "कृपया मुझे शुद्ध कर, क्योंकि यदि तेरी इच्छा हो तो तू मुझे शुद्ध कर सकता है!"

41 यीशु को उस पर तरस आया। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उस मनुष्य को छुआ। फिर उसने उससे कहा, "मेरी यह इच्छा है कि तुझे चंगा करूँ, इसलिए चंगा हो जा!"

42 तुरन्त ही वह मनुष्य चंगा हो गया! अब वह कोढ़ी न रहा!

43 जब यीशु उस मनुष्य को विदा कर रहा था तो उसने उसे यह कहकर चेतावनी दी,

44 "जो कुछ अभी घटित हुआ है वह किसी से न कहना। बजाए इसके, याजक के पास जाकर स्वयं को उसे दिखा ताकि वह तेरी जाँच करके देखे कि अब तुझे कोढ़ नहीं है। तब वह भेंट चढ़ा जिसे चढ़ाने की आज्ञा मूसा ने उन लोगों को दी है जिन्हें परमेश्वर ने कोढ़ से चंगा किया है। यह समुदाय के लिए गवाही ठहरेगा कि अब तुझे कोढ़ नहीं है।"

45 उस मनुष्य ने यीशु की बात का पालन नहीं किया। वह बहुत से लोगों को इस विषय में बताने लगा कि कैसे यीशु ने उसे चंगा किया। जिसके परिणामस्वरूप, यीशु फिर सार्वजनिक रूप से नगरों में प्रवेश न कर सका, क्योंकि लोगों की भीड़ उसे घेर लेती थी। बजाए इसके, वह नगरों के बाहर ऐसे स्थानों में रहा जहाँ कोई नहीं रहता था। परन्तु उस सारे प्रदेश से लोग उसके पास आते रहे।

Mark 2:1

1 कुछ दिन बीतने के बाद, यीशु कफरनहूम नगर में लौट आया। लोगों ने दूसरों तक शीघ्र ही यह समाचार फैला दिया कि यीशु लौट आया है और एक घर में है।

2 जहाँ यीशु ठहरा हुआ था वहाँ जल्दी ही बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। वह संख्या इतनी अधिक थी कि घर भर गया था। फिर खड़े होने की जगह भी नहीं बची, यहाँ तक कि द्वार के आसपास भी जगह न बची। यीशु ने उन्हें परमेश्वर का संदेश सुनाया।

3 कुछ लोग घर के निकट यीशु के पास एक मनुष्य को लेकर आए जो लकवे का मारा हुआ था। चार पुरुष उसे खाट पर उठाए हुए थे।

4 वे लोग उस मनुष्य को इकट्ठा हुई उस भीड़ के कारण यीशु के समीप नहीं ले जा सके। इसलिए वे उस घर की छत पर चढ़ गए, और यीशु के ऊपर छत में एक बड़ा छेद कर दिया। उन्होंने उस लकवे के मारे मनुष्य को उसकी खाट पर उस छेद के माध्यम से यीशु के सामने उतार दिया।

5 जब यीशु ने यह जान लिया कि इन लोगों को विश्वास है कि वह उस मनुष्य को चंगा कर सकता है, तो उसने उस लकवे के मारे मनुष्य से कहा, "हे मेरे पुत्र, मैंने तेरे पापों को क्षमा कर दिया है!"

6 यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले कुछ लोग वहाँ बैठे हुए थे। वे अपने-अपने मन में विचार करने लगे,

7 “यह मनुष्य स्वयं को क्या समझता है, जो ऐसी बातें कर रहा
है? वह तो ऐसा बोलकर परमेश्वर का अपमान करता है! कोई
भी व्यक्ति पापों को क्षमा नहीं कर सकता—केवल परमेश्वर
ही कर सकता है!”

8 उसी समय यीशु ने अपने में जान लिया कि वे क्या सोच रहे
हैं। उसने उनसे कहा, “तुम ऐसा क्यों सोच रहे हो कि मुझे पापों
को क्षमा करने का अधिकार नहीं है?

9 मेरे लिए इस लकवे के मारे मनुष्य से क्या कहना आसान
होगा, ‘मैंने तेरे पापों को क्षमा कर दिया है’ या ‘खड़ा हो! अपनी
खाट उठा और चल-फिर’?

10 मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि परमेश्वर ने मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी
पर पापों को क्षमा करने का अधिकार भी प्रदान किया है।”
फिर उसने उस लकवे के मारे मनुष्य से कहा,

11 “खड़ा हो! अपनी खाट उठा और घर चला जा!”

12 तुरन्त ही वह मनुष्य खड़ा हो गया। जब सब लोग देख रहे
थे उसी समय वह अपनी खाट उठाकर उस घर से बाहर चला
गया। वे सब के सब अचम्भित हो गए, और उन्होंने परमेश्वर
की स्तुति की और कहा, “जो कुछ अभी हुआ वैसा हमने पहले
कभी नहीं देखा!”

13 यीशु कफरनहूम नगर से निकला और फिर से गलील की
झील के किनारे-किनारे जाने लगा। एक बड़ी भीड़ उसके
पास आई, और उसने उन्हें शिक्षा दी।

14 जब वह जा रहा था, तो उसने लेवी नामक एक पुरुष को
देखा, जिसके पिता का नाम हलफई था। वह अपने कार्यस्थल
में बैठा हुआ था जहाँ वह चुंगी लिया करता था। यीशु ने उससे
कहा, “मेरे साथ चल और मेरा चेला हो जा।” वह उठकर यीशु
के साथ हो लिया।

15 बाद में, यीशु लेवी के घर में भोजन कर रहा था। बहुत से
चुंगी लेने वाले पुरुष—और दूसरे लोग जिनको धार्मिक अगुवे
पापी मानते थे—यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन कर
रहे थे। वहाँ ऐसे बहुत से लोग थे जो यीशु के साथ हर जगह जा
रहे थे।

16 जो लोग यहूदी व्यवस्था सिखाते थे और जो फरीसी
सम्प्रदाय के सदस्य थे, उन्होंने देखा कि यीशु पापियों और
चुंगी लेने वाले मनुष्यों के साथ भोजन कर रहा है। उन्होंने यीशु
के चेलों से पूछा, “वह पापियों और चुंगी लेने वाले मनुष्यों के
साथ क्यों खाता-पीता है?”

17 जब यीशु ने वह सुना जो वे पूछ रहे थे, तो उसने यहूदी
व्यवस्था सिखाने वाले उन मनुष्यों से कहा,“स्वस्थ लोगों को
वैद्य की आवश्यकता नहीं होती। इसके विपरीत, जो लोग
बीमार हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता होती है। मैं उन लोगों को
मेरे पास आने के लिए आमंत्रित करने नहीं आया जो स्वयं को
धर्मी समझते हैं, परन्तु उनको आमंत्रित करने आया हूँ जो
जानते हैं कि उन्होंने पाप किया है।”

18 अब उस समय पर, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अनुयायी
और कुछ ऐसे लोग जो फरीसियों के सम्प्रदाय से जुड़े हुए थे
भोजन से परहेज कर रहे थे, जैसा कि वे अक्सर किया करते
थे। कुछ लोगों ने यीशु के पास आकर उससे पूछा, “यूहन्ना
और फरीसियों के चेले तो अक्सर भोजन से परहेज करते हैं।
तेरे चेले भोजन से परहेज क्यों नहीं करते?”

19 यीशु ने उनसे कहा, “जब कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह
करने वाला होता है, तो जब तक वह अपने मित्रों के साथ-साथ
रहता है, तो वे निश्चित रूप से भोजन से परहेज नहीं करेंगे।
विवाह का समय दूल्हे के साथ दावत और उत्सव मनाने का
समय होता है। यह भोजन से परहेज करने का समय नहीं
होता, विशेष रूप से जब दूल्हा उनके साथ होता है।

20 परन्तु किसी दिन, दूल्हा उसके मित्रों से अलग कर दिया
जाएगा। तब उन दिनों में, वे भोजन से परहेज करेंगे।”

21 यीशु उनसे कहता ही चला गया, “लोग पुराने वस्त्र का छेद
सुधारने के लिए कोरे कपड़े का पैबंद नहीं लगाते। यदि उन्होंने
ऐसा किया, उस कपड़े को धोते समय, वह पैबंद सिकुड़
जाएगा, और नये कपड़े का टुकड़ा पुराने कपड़े को और
अधिक फाड़ देगा। जिसके परिणामस्वरूप, वह छेद और भी
बड़ा हो जाएगा!

22 उसी प्रकार से, लोग नया दाखरस पुराने चमड़े के थैलों में
नहीं भरते। यदि उन्होंने ऐसा किया, तो नया दाखरस उन
चमड़े के थैलों को इसलिए फाड़ देगा, क्योंकि जब दाखरस
उफान मारेगा तो थैले फैलेंगे नहीं। जिसके परिणामस्वरूप,
दाखरस और चमड़े के थैले दोनों बर्बाद हो जाएँगे। इसके

विपरीत, लोगों को नया दाखरस चमड़े के नये थैलों में भरना चाहिए!"

23 यहूदियों के विश्रामदिन पर, यीशु अपने चेलों के साथ गेहूँ के खेतों में से होकर जा रहा था। जब वे गेहूँ के खेतों में से होकर जा रहे थे, तो यीशु के चेले गेहूँ की कुछ बालें तोड़ रहे थे।

24 जो वे कर रहे थे उसे देखकर कुछ फरीसियों ने यीशु से कहा, "यह देख! वे विश्रामदिन से सम्बन्धित यहूदी व्यवस्था को तोड़ रहे हैं। वे ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

25 यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने दाऊद राजा और उसके लोगों के विषय में जो उसके साथ थे, उस पवित्रशास्त्र को कभी नहीं पढ़ा जब वे भूखे थे?

26 जिस समय पर एब्यातार महायाजक था, उस समय दाऊद ने परमेश्वर के भवन में जाकर रोटियाँ मांगी। महायाजक ने उसे उनमें से कुछ रोटियाँ दीं जो परमेश्वर के सामने रखी गई थीं। हमारी व्यवस्था के अनुसार, उस रोटी को केवल याजक ही खा सकते थे! परन्तु दाऊद ने उसमें से कुछ खाया। फिर उसने उसमें से कुछ उन लोगों को भी दी जो उसके साथ थे।"

27 यीशु ने आगे उनसे कहा, "परमेश्वर ने मानवजाति के निमित्त विश्रामदिन को बनाया है। उसने विश्रामदिन को मानवजाति पर बोझ होने के लिए नहीं बनाया।

28 इसलिए, स्पष्ट है कि मनुष्य का पुत्र, विश्रामदिन का भी प्रभु है!"

Mark 3:1

1 एक और यहूदी विश्रामदिन में, यीशु फिर से एक यहूदी सभास्थल में गया। वहाँ पर एक मनुष्य था जिसका हाथ सूखा हुआ था।

2 फरीसी सम्प्रदाय के कुछ लोग उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे कि क्या वह उस मनुष्य को विश्रामदिन में चंगा करेगा, क्योंकि वह उसे कुछ गलत काम करने का दोषी ठहराना चाहते थे।

3 यीशु ने उस सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, "यहाँ सबके सामने खड़ा हो जा!" {अतः वह मनुष्य खड़ा हो गया।}

4 तब यीशु ने लोगों से कहा, "जो व्यवस्था परमेश्वर ने मूसा को दी थी, क्या वह विश्रामदिन में लोगों को भलाई करने की अनुमति प्रदान करती है, या बुराई करने की? क्या वह व्यवस्था हमें विश्रामदिन में लोगों का जीवन बचाने की अनुमति प्रदान करती है, या वह हमें किसी व्यक्ति की सहायता करने से इन्कार करने और उन्हें मरने देने की अनुमति प्रदान करती है?" परन्तु उन्होंने प्रतिउत्तर नहीं दिया।

5 उसने क्रोध में भरकर चारों ओर उन पर दृष्टि की। वह इस कारण बड़ा निराश हो गया कि वे लोग हठीले थे {और उस मनुष्य की सहायता नहीं करना चाहते थे}। इसलिए , उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ बढ़ा!" जब उस मनुष्य ने अपना सूखा हाथ बढ़ाया, तो वह फिर से स्वस्थ हो गया!

6 फरीसी उस सभास्थल से निकल गए। वे तुरन्त ही हेरोदेस अंतिपास, जो गलील प्रदेश पर शासन करता था, का समर्थन करने वाले कुछ यहूदियों से मिले। उन्होंने मिलकर योजना बनाई कि यीशु की हत्या कैसे करें।

7 यीशु और उसके अनुयायी नगर से निकलकर गलील की झील के पास वाले क्षेत्र में चले गए। लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे चली आती थी। जो लोग उसके पीछे-पीछे चले आते थे वे गलील और यहूदिया प्रदेशों से,

8 यरूशलेम नगर से, इदूमिया प्रदेश से, यरदन के पूर्वी प्रदेश से, और सोर एवं सीदोन नगरों के आसपास के प्रदेश से आए थे। वे सब लोग यीशु के पास इसलिए आए थे क्योंकि जो काम वह कर रहा था उन्होंने उसके विषय में सुना था।

9 क्योंकि उसने बहुत से लोगों को चंगा किया था, इसलिए बहुत से अन्य लोग जिन्हें विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ थीं उसे छूने के लिए आगे झपटते थे। वे विश्वास करते थे कि यदि वे उसे केवल छू लें, तो वह छू लेना ही उनको स्वस्थ कर देगा। इसलिए उसने अपने चेलों से कहा कि वे उसके लिए एक छोटी नाव को तैयार रखें ताकि जब लोग उसे छूने के लिए आगे झपटें तो वे उसे कुचल न दें।

11 जब भी दुष्टात्माओं ने यीशु को देखा, तो उन्होंने उन लोगों को यीशु के आगे पटक दिया जो उनके वश में थे और उसे पुकार कर कहा, "तू परमेश्वर का पुत्र है!"

12 यीशु ने दृढ़तापूर्वक दुष्टात्माओं को आज्ञा दी कि वे किसी से न कहें कि वह कौन है।

13 यीशु पहाड़ों पर चला गया। वहाँ उसने उनको बुलाया जिनको वह अपने साथ ले जाना चाहता था और वे उसके पीछे-पीछे चले।

14 उसने अपने साथ यात्रा करने के लिए बारह पुरुषों को नियुक्त किया, जिन्हें वह प्रचार करने के लिए भी भेजेगा। उसने उन्हें अपने विशेष प्रतिनिधि कहकर पुकारा।

15 उसने उन्हें लोगों में से दुष्टात्माओं को निकलने के लिए विवश करने की सामर्थ्य भी प्रदान की।

16 और यीशु ने 12 पुरुषों को नियुक्त किया। उसने शमौन को नियुक्त करके उसका एक नया नाम, पतरस रखा।

17 और पतरस के साथ, यीशु ने जब्दी के पुत्र याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना को भी नियुक्त किया। उसने उन दोनों का उनके भड़कते जोश के कारण नया नाम रखा, 'ऐसे पुरुष जो गर्जन के समान हैं';

18 और उसने अन्द्रियास, फिलिप्पुस, बरतुल्मै, मत्ती, थोमा, और हलफई के पुत्र याकूब को नियुक्त किया; और उसने तद्दै, शमौन जेलोतेस,

19 और यहूदा इस्करियोती को नियुक्त किया (जिसने बाद में उसे पकड़वा दिया था)।

20 यीशु और उसके चेले एक घर में गए। जहाँ वह ठहरा हुआ था वहाँ फिर से भीड़ इकट्ठा हो गई। उसके आसपास बहुत से लोगों ने भीड़ लगा ली। यहाँ तक कि उसे और उसके चेलों को भोजन करने का भी समय न मिला।

21 जब उसके सम्बन्धियों ने इस विषय में सुना, तो वे उसे अपने साथ घर ले जाने के लिए आए, क्योंकि कुछ लोग कह रहे थे कि वह पागल है।

22 यहूदी व्यवस्था के सिखाने वाले कुछ पुरुष यरूशलेम नगर के पहाड़ से नीचे आए। उन्होंने सुना कि यीशु लोगों में से दुष्टात्माओं को निकल जाने के लिए विवश करता था। इसलिए वे लोगों से कहने लगे, "यीशु दुष्टात्माओं पर शासन करने वाले बालजबूल के वश में है। वही है जो यीशु को लोगों में से दुष्टात्माओं को निकलने के लिए विवश करने की शक्ति प्रदान करता है!"

23 इसलिए यीशु ने उन पुरुषों को अपने पास बुलाया। यीशु ने उनसे दृष्टांतों में बातें कीं और कहा, "शैतान ही शैतान को कैसे निकाल सकता है?

24 यदि एक ही देश में रहने वाले लोग एक दूसरे के विरुद्ध लड़ेंगे, तो उनका देश एक संयुक्त देश नहीं रहेगा।

25 और यदि एक ही घर में रहने वाले लोग आपस में लड़ेंगे, तो निश्चित रूप से वे एक परिवार के रूप में एक साथ नहीं रह पाएँगे।

26 उसी प्रकार से, यदि शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ आपस में लड़ रहे होते, तो शैतान बलवंत होने के बजाए, शक्तिहीन हो जाता।

27 कोई भी जन किसी बलवंत के घर में घुसकर उसकी सम्पत्ति को तब तक नहीं ले सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवंत को बांध न ले। केवल तब ही वह उस व्यक्ति के घर का सामान चुरा सकेगा।"

28 यीशु ने यह भी कहा, "इस बात पर ध्यानपूर्वक विचार करो! लोग शायद कई प्रकार से पाप करें, और शायद वे परमेश्वर के बारे में बुरा बोलें, तब पर भी परमेश्वर उन्हें क्षमा कर सकता है।

29 परन्तु यदि कोई जन पवित्र आत्मा के विषय में बुरी बातें बोलता है, तो परमेश्वर उन्हें कभी क्षमा न करेगा। वह व्यक्ति सदा के लिए पाप को दोषी ठहरेगा।"

30 यीशु ने उनसे यह इसलिए कहा, क्योंकि वे कह रहे थे, "वह किसी दुष्टात्मा के वश में है!"

31 जहाँ यीशु शिक्षा दे रहा था वहाँ यीशु की माता और छोटे भाई-बहन आए। जिस समय पर वे बाहर खड़े थे, उन्होंने किसी को भीतर भेजा कि यीशु को उनके पास आने के लिए कहे।

32 यीशु के चारों ओर एक भीड़ बैठी हुई थी। उनमें से कुछ ने उससे कहा, "सुन! तेरी माता और छोटे भाई-बहन बाहर हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।"

33 यीशु ने उनसे पूछा, "मेरी माता कौन है? मेरे भाई-बहन कौन हैं?"

34 जो उसके साथ बैठे हुए थे उन पर चारों ओर दृष्टि करने के बाद, उसने कहा, "यहाँ देखो! तुम ही मेरी माता और मेरे भाई-बहन हो।

35 क्योंकि जो लोग उस काम को करते हैं जो परमेश्वर चाहता है, वे ही मेरे भाई, मेरी बहन, और मेरी माता हैं!"

Mark 4:1

1 एक और समय पर यीशु गलील की झील के किनारे लोगों को शिक्षा देने लगा। जब वह शिक्षा दे रहा था, तो उसके चारों ओर एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। क्योंकि {वह बहुत ही बड़ी भीड़ थी}, इसलिए वह एक नाव पर चढ़कर पानी में चला गया। भीड़ ने झील के किनारे से ही उसकी शिक्षा को सुना।

2 उसने उन्हें सबक के साथ वाली सरल कहानियों के द्वारा शिक्षा दी। उसने उनसे यह कहा:

3 "मेरी सुनो। एक व्यक्ति अपने खेत में बीज बोने निकला।

4 जब वह उन्हें मिट्टी में छितरा रहा था, तो कुछ बीज मार्ग में गिरे। फिर कुछ पक्षियों ने आकर उन बीजों को खा लिया।

5 अन्य बीज ऐसी भूमि पर गिरा जहाँ मिट्टी कम थी परन्तु चट्टानें बहुत थीं। शीघ्र ही मिट्टी में से अंकुर दिखने लगा क्योंकि मिट्टी बहुत गहरी नहीं थी।

6 दिन निकलने पर, जब सूर्य की किरणें उस युवा पौधे पर पड़ीं, तो वह सूखकर इसलिए मुर्झा गया, क्योंकि उथली जड़ों को भूमि में चट्टानों के बीच पानी नहीं मिला।

7 जब वह बो रहा था, तो दूसरा बीज ऐसी भूमि पर गिरा जिसमें कंटीले पौधों की जड़ें थीं। अंकुर बढ़ तो गया, परन्तु कंटीले पौधों ने भी बढ़कर अच्छे पौधे को दबा दिया। इसलिए उस पौधे में से अनाज उत्पन्न नहीं हुआ।

8 परन्तु जब वह बो रहा था, तो एक और बीज अच्छी भूमि पर गिरा। जिसके परिणामस्वरूप, वह अंकुरित होकर बड़ा हुआ, और फिर बहुत सारा अनाज उत्पन्न किया। उस व्यक्ति द्वारा बोए गए बीज में से कुछ पौधों ने 30 गुना अधिक उपज दी। कुछ ने 60 गुना उपज दी। कुछ ने 100 गुना अधिक उपज दी।"

9 तब यीशु ने कहा, "जो कोई भी सुनने का इच्छुक है, वह जो मैं कह रहा हूँ उसे सुन ले।"

10 बाद में जब केवल 12 चेले और अन्य निकटतम अनुयायी उसके साथ थे, तो उन्होंने उससे दृष्टांतों के बारे में पूछा।

11 उसने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें वह संदेश इस बारे में बताया है कि परमेश्वर स्वयं को राजा के रूप में कैसे प्रकट करता है, परन्तु दूसरों को मैं दृष्टांतों में सुनाता हूँ।

12 जब वे देखेंगे कि मैं क्या कर रहा हूँ, तो वे जान नहीं पाएँगे {कि मैं यह क्यों कर रहा हूँ}। जब वे सुनेंगे कि मैं क्या कह रहा हूँ, तो वे समझ नहीं पाएँगे कि इसका क्या अर्थ है। ऐसा इसलिए है ताकि कहीं वे पश्चाताप न करें, और कहीं परमेश्वर उन्हें क्षमा न कर दे।"

13 यीशु ने अपने चेलों से यह भी कहा, "क्या तुम इस दृष्टांत को नहीं समझते? फिर जब मैं तुम्हें दूसरे दृष्टांत सिखाऊँगा तो तुम कैसे समझोगे?

14 जो दृष्टांत मैंने तुमको बताया, उसमें बीज बोने वाला व्यक्ति किसी ऐसे जन को दर्शाता है जो दूसरों को परमेश्वर का संदेश सिखाता है।

15 जब बीज मार्ग के किनारे गिरा तो कुछ लोग उस उदाहरण के समान होते हैं। जब वे परमेश्वर का संदेश सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर जो कुछ उन्होंने सुना है उसे भुलवा देता है।

16 कुछ लोग उस बीज के समान होते हैं जिसे किसान पथरीली मिट्टी में बोता है। जब वे परमेश्वर का संदेश सुनते हैं, तो तुरन्त उसे आनंद के साथ स्वीकार कर लेते हैं।

17 परन्तु उनकी अपनी जड़ें मजबूत नहीं होती, और उनमें सहनशक्ति की कमी होती है। इस कारण से, जब लोग परमेश्वर के संदेश के कारण उनको सताते हैं, तो वे झट से विश्वास करना छोड़ देते हैं।

18 कुछ लोग उस मिट्टी के समान होते हैं जिसमें कंटीली झाड़ियाँ होती हैं। ऐसे लोग परमेश्वर का संदेश सुनते तो हैं

19 परन्तु केवल सांसारिक वस्तुओं की और धनवान बनने की चिंता करते हैं, और परमेश्वर का संदेश भूल जाते हैं। ये बातें व्यक्ति के जीवन को भरकर जो संदेश उस मिला था उसका गला घोंट देती हैं, और वह व्यक्ति फल उत्पन्न करने में असमर्थ हो जाता है।

20 परन्तु कुछ लोग उस बीज के समान होते हैं जिसे अच्छी भूमि में बोया गया था। वे परमेश्वर का संदेश सुनकर उसे स्वीकार करते हैं, और वे उस पर विश्वास करते हैं, और वही करते हैं जो परमेश्वर उनसे चाहता है। वे उन अच्छे पौधों के समान हैं जो 30, 60, या 100 दाने उत्पन्न करते हैं।

21 उसने चेलों को एक और दृष्टांत सुनाया: "निश्चित रूप से लोग तेल का दीया जलाकर घर में इसलिए नहीं लाते कि उसके ऊपर कुछ रखकर उसका प्रकाश छिपा दें। बजाए इसके, वे उसे दीवट पर रखते हैं ताकि उसका प्रकाश चमके।

22 उसी प्रकार से, जो बातें छिपी हुई थीं—एक दिन सब लोग उन्हें जान लेंगे—और जो बातें गुप्त में घटित हुई थीं—एक दिन सब लोग उन्हें पूर्ण प्रकाश में देखेंगे।

23 यदि तुम इसे समझना चाहते हो तो जो कुछ तुमने अभी सुना है उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो।"

Mark 4:1

24 "जो कुछ तुम मुझे तुमसे कहते हुए सुनते हो उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो, क्योंकि परमेश्वर तुमको उसी सीमा तक समझने देगा जिस सीमा तक तुम मेरी बातों पर ध्यान देते हो। यहाँ तक कि वह तुमको इससे भी अधिक समझने देगा।

25 क्योंकि यदि किसी मनुष्य में कुछ समझ हो, तो वह और भी अधिक पाएगा। परन्तु यदि किसी मनुष्य में समझ न हो, तो जो कुछ भी थोड़ा-बहुत उसके पास है, वह उसे खो देगा।"

26 यीशु ने यह भी कहा, "जब परमेश्वर स्वयं को राजा के रूप में प्रकट करेगा, तो यह उस मनुष्य के समान है जो भूमि पर बीज छितराया हो।

27 इसके बाद वह बीजों की चिंता किए बिना प्रतिदिन रात को सोता और जागता था। उस दौरान बीज अंकुरित हुए और इस प्रकार से बढ़े कि वह समझ न सका।

28 भूमि ने अपने आप से फसल उत्पन्न की। सबसे पहले डंठल दिखाई दिए। फिर बालें दिखाई दीं। फिर बालों में भरी गुठलियाँ दिखाई दीं।

29 जैसे ही दाना पक गया, तो उसने उसे काटने के लिए लोगों को भेजा क्योंकि कटनी का समय हो गया था।"

30 यीशु ने उन्हें सबक के साथ एक और कहानी सुनाई। उसने कहा, "जब परमेश्वर स्वयं को राजा के रूप में प्रकट करना आरम्भ करेगा, तो यह किसके समान होगा? इसका वर्णन करने के लिए मैं किस शब्द चित्र का उपयोग करूँ?

31 यह राई के दानों के समान है, जो भूमि में बोए गए बीजों में सबसे छोटे होते हैं, और पृथ्वी पर पाए जाने वाले बीजों में सबसे छोटे होते हैं।

32 बोए जाने के बाद, वे बढ़कर बगीचे को दूसरे पौधों से बड़े हो जाते हैं। उनमें से बड़ी-बड़ी डालियाँ निकलती हैं ताकि उनकी छाया में पक्षी घोंसला बना सकें।"

33 जिस समय पर यीशु ने लोगों से परमेश्वर के संदेश के विषय में बातें कीं, तो उसने बहुत से दृष्टांतों का उपयोग किया। उसने उनको उतना बताया जितना समझने में वे सक्षम थे।

34 जब वह उनसे बातें करता था तो उसने हमेशा सबक वाली कहानियों का उपयोग किया। परन्तु जब वह अपने चेलों के साथ अकेला था तो उसने उन सभी दृष्टांतों का व्याख्या उनसे की।

35 उसी दिन, जब सूर्य अस्त हो रहा था, तो यीशु ने अपने चेलों से कहा, "आओ हम गलील की झील पार करके दूसरी ओर चलें।"

36 यीशु पहले से ही नाव में था, इसलिए वे भीड़ को छोड़कर जलयात्रा पर निकल गए। उनके साथ दूसरे लोग भी अपनी-अपनी नावों में गए।

37 एक बड़ी आंधी आई और लहरें नाव में आने लगीं! नाव में पानी भर जाने का खतरा था।

38 यीशु नाव के पिछले भाग में था। वह गद्दी पर सिर रखकर सो रहा था। इसलिए चेलों ने उसे जगाया और उससे कहा, "हे गुरु! क्या तुझे इस बात की चिंता नहीं कि हम मरने वाले हैं?"

39 अतः यीशु ने उठकर हवा को डांटा, और उसने झील से कहा, "चुप रह! शांत हो जा!" हवा का बहना रुक गया, और फिर गलील की झील बहुत शांत हो गई।

40 उसने अपने चेलों से कहा, "तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अभी तक विश्वास नहीं है कि मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ?"

41 वे डर गए थे। वे आपस में कहने लगे, "यह मनुष्य कौन है? यहाँ तक कि हवा और लहरें भी इसकी आज्ञा मानती हैं!"

Mark 5:1

1 यीशु और उसके चेले गलील की झील की दूसरी ओर पहुँच गए। जहाँ वे उतरे थे उस स्थान के पास गिरासेन नामक लोग रहते थे।

2 जब यीशु नाव पर से उतरा, तो कब्रिस्तान की कब्रों में से एक मनुष्य निकलकर आया। वह मनुष्य दुष्टात्माओं के वश में था।

Mark 5:1

3 वह मनुष्य कब्रिस्तान में से बाहर आया क्योंकि वह कब्रों के बीच में रहा करता था। लोगों ने उसे रोकने का बहुत बार प्रयास किया। परन्तु वे उसे {धातु की} जंजीरों से भी नहीं रोक पाए।

4 जब भी उन्होंने जंजीरों और बेड़ियों को काम में लिया, तब-तब वह मनुष्य उनको तोड़ देता था। वह इतना बलवान था कि कोई भी जन उसे नियंत्रित करने में सक्षम नहीं हुआ।

5 वह मनुष्य रात-दिन अपना समय कब्रिस्तान में लोगों को गाड़े जाने के स्थानों के बीच में व्यतीत करता था। पहाड़ी देश में वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया करता था और स्वयं को धारवाले पत्थरों से घायल किया करता था।

6 जब उसने दूर ही से यीशु को नाव पर से उतरते देखा, तो वह उसके पास दौड़ा चला आया और उसके आगे घुटने टिका दिए।

7 उस दुष्टात्मा ने ऊँचे स्वर में पुकारकर कहा, "हे यीशु, परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे अकेला छोड़ दे! परमेश्वर के नाम की शपथ ले कि तू मुझे नहीं सताएगा!" उस दुष्टात्मा ने यह बात इसलिए कही क्योंकि यीशु उससे कह रहा था, "हे अशुद्ध आत्मा, उस मनुष्य में से निकल जा!"

9 यीशु ने उस अशुद्ध आत्मा से पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने प्रतिउत्तर दिया, "मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत सारी दुष्टात्माएँ हैं जो इस मनुष्य में समाई हुई हैं।"

10 फिर वे दुष्टात्माएँ उग्र होकर यीशु से लगातार विनती करती रहीं कि वह उन्हें उस देश से बाहर न भेजे।

11 उसी समय, सूअरों का एक बड़ा झुंड पास ही की पहाड़ी पर चर रहा था।

12 इसलिए उन दुष्टात्माओं ने यीशु से यह कहकर याचना की, "हमें सूअरों के पास जाने की अनुमति दे कि हम उनमें समा जाएँ!"

13 यीशु ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दे दी। इसलिए वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति को छोड़कर सूअरों में समा गईं।

लगभग 2, 000 सूअरों की संख्या वाला वह झुंड खड़ी पहाड़ी पर से झील में जा गिरा, जहाँ वे डूब गए।

14 और जो लोग उन सूअरों को चरा रहे थे, वे दौड़कर नगर और गाँवों में गए, और जो कुछ हुआ था उसका समाचार दिया। {उन स्थानों में रहने वाले} बहुत से लोग स्वयं देखने को गए कि क्या हुआ था।

15 वे सब लोग उस स्थान में आए जहाँ यीशु था। फिर उन्होंने उस मनुष्य को देखा जिसे पहले दुष्टात्माओं ने वश में किया हुआ था। वह वहाँ कपड़े पहने हुए बैठा था और अब वह ऐसा कोई काम नहीं कर रहा था जिससे लगे कि वह दुष्टात्माओं के वश में है। जब उन्होंने यह सब देखा तो वे डर गए।

16 जिन लोगों ने वह देखा था जो यीशु ने किया था, उन्होंने उन्हें वह सब बताया जो नगर और गाँवों से आए थे। उन्होंने उन्हें इस विषय में बताया कि उस मनुष्य के साथ क्या हुआ था जो पहले दुष्टात्माओं के वश में था। उन्होंने यह बात भी बताई जो सूअरों के साथ हुई थी।

17 तब लोगों ने यीशु से उनके देश से चले जाने की याचना की।

18 जब यीशु चले जाने के लिए नाव पर चढ़ गया, तो पहले जो मनुष्य दुष्टात्माओं के वश में था, उसने उससे विनती की, "कृपया मुझे तेरे साथ-साथ चलने दे!"

19 परन्तु यीशु ने उस मनुष्य को अपने साथ आने न दिया। बजाए इसके, उसने उससे कहा, "अपने परिवार के पास घर जा और जो-जो काम प्रभु ने तेरे लिए किए हैं उन्हें वह सब बता। "

20 अतः उस मनुष्य ने जाकर उस देश के दस नगरों में यात्राएँ कीं। जो-जो काम यीशु ने उसके लिए किए थे उसने लोगों को वह सब बताए। जो बातें उस मनुष्य ने बताईं उसे सुनने वाले सब लोग चकित रह गए।

21 जब यीशु नाव पर चढ़कर फिर से गलील की झील के पार गया, तो किनारे पर एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठा हो गई।

22 यहूदी सभास्थल के सरदारों में से एक, जिसका नाम याईर था, वहाँ पर आया। जब उसने यीशु को देखा तो उसने उसके पाँवों के आगे घुटने टिका दिए।

23 फिर उसने गिड़गिड़ाकर यीशु याचना की, "मेरी पुत्री बीमार है और मरने पर है! कृपया मेरे घर आकर उस पर अपने हाथ रख। उसे चंगा कर कि वह जीवित रहे!"

24 अतः यीशु उसके साथ गया। एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे हो ली, और बहुत से लोग उसके निकट गिरे पड़ते थे।

25 भीड़ में एक स्त्री थी जिसे लहू बहने की बीमारी थी। उसे 12 वर्षों से प्रतिदिन लहू बह रहा था।

26 वह बहुत बार अनेक वैद्यों के हाथ से पीड़ित हुई थी। उसी समय, वह अपना सारा धन खर्च करने पर भी ठीक नहीं हुई थी। बजाए इसके, वह और भी बदतर हो गई थी।

27 जब उसने सुना कि यीशु लोगों को चंगा करता है, तो वह उसके पीछे-पीछे चलने वाली भीड़ में शामिल हो गई। जैसे ही वह उसके निकट पहुँची तो उसने उसके वस्त्र को छू लिया। वह सोच रही थी, "यदि मैं केवल उसके वस्त्र ही को छू लूँ, तो मैं इससे चंगी हो जाऊँगी।"

29 झट से उसका लहू बहना बंद हो गया। उसी समय, उसने अपनी देह में जान लिया कि यीशु ने उसे उसकी बीमारी से ठीक कर दिया है।

30 यीशु ने भी तुरन्त अपने में महसूस किया कि उसकी सामर्थ्य ने किसी को चंगा किया है। इसलिए वह पीछे मुड़कर भीड़ से पूछने लगा, "किसने मेरे वस्त्र को छुआ?"

31 उसके चेलों ने प्रतिउत्तर दिया, "तू देख सकता है कि तेरे निकट बहुत से लोग गिरे पड़ते हैं! तो सम्भव है कि बहुत से लोगों ने तुझे छुआ होगा! तो फिर तू क्यों पूछता है कि 'मुझे किसने छुआ?'"

32 परन्तु यीशु उस व्यक्ति को देखने के लिए चारों ओर ढूँढ़ता ही रहा जिसने उसे छुआ था।

33 वह स्त्री बहुत डर गई और कांपने लगी, क्योंकि वह जानती
थी कि जिस समय उसने यीशु को छुआ, उसी समय उसने
उसे चंगा कर दिया था। उसने उसके आगे घुटने टिकाकर
उसे बता दिया जो उसने किया था।

34 उसने उससे कहा, "हे पुत्री, क्योंकि तूने विश्वास किया था
कि मैं तुझे चंगा कर सकता हूँ, इसलिए अब मैंने तुझे चंगा कर
दिया है। इस बात को जानकर शांत रह कि मैंने तुझे तेरी
बीमारी से हमेशा के लिए चंगा कर दिया है।"

35 जब यीशु उस स्त्री से बातें कर ही रहा था तो कुछ लोग आ
पहुँचे जो याईर के घर से आए थे। उन्होंने याईर से कहा, "तेरी
पुत्री अब मर गई है। इसलिए अब गुरु को तेरे घर लाकर
परेशान करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

36 परन्तु इन पुरुषों ने जो कहा था उसे सुनकर यीशु ने याईर
से कहा, "इस बात से मत डर कि तेरी पुत्री मर गई है! केवल
विश्वास रख तो वह जीवित रहेगी!"

37 फिर उसने केवल अपने निकटतम चेलों अर्थात पतरस,
याकूब और यूहन्ना को अपने साथ उस घर में जाने की अनुमति
दी। उसने और किसी भी जन को अपने साथ आने नहीं दिया।

38 जब वे याईर के घर के निकट पहुँचे, तो यीशु ने देखा कि
वहाँ जो लोग थे वे अशांत थे। वे रो रहे थे और ऊँचे स्वर में
विलाप कर रहे थे।

39 उसने घर में प्रवेश करके वहाँ पर मौजूद लोगों से कहा,
"तुम इतने उदास क्यों हो और रो क्यों रहे हो? बच्ची मरी नहीं
है, केवल सो रही है।"

40 लोग उस पर हँसने लगे क्योंकि वे जानते थे कि वह मर गई
है। उसने बाकी सब लोगों को घर से बाहर भेज दिया। फिर
वह उस बच्ची के माता-पिता और उन तीन चेलों को जो उसके
साथ थे लेकर उस कमरे में गया जहाँ वह बच्ची पड़ी थी।

41 उसने उस बच्ची का हाथ पकड़कर उसकी ही भाषा में
उससे कहा, "तलीता कूम!" जिसका अर्थ है, "हे छोटी लड़की,
उठ खड़ी हो!"

42 एक ही बार में वह बच्ची उठकर चलने-फिरने लगी। (यह
आश्चर्य की बात नहीं थी कि वह चल सकती है क्योंकि वह 12
वर्ष की आयु की थी।) जब ऐसा हुआ तो जो लोग वहाँ मौजूद
थे वे बड़े चकित हो गए।

43 यीशु ने यह कहकर उन्हें सख्ती से आदेश दिया, "जो मैंने
किया है उसके विषय में किसी से न कहना!" फिर उसने उनसे
कहा कि लड़की को कुछ खाने के लिए दो।

Mark 6:1

1 यीशु कफरनहूम से निकलकर अपने जन्मस्थान नासरत को
चला गया। उसके चेले भी उसके साथ गए।

2 यहूदियों के विश्रामदिन में, उसने यहूदियों के प्रचार करने
वाले स्थान में जाकर लोगों को शिक्षा दी। जो उसे सुन रहे थे
उनमें से बहुत से लोग चकित रह गए। वे आश्चर्य करने लगे कि
उसने यह सारी बुद्धि और चमत्कार करने की सामर्थ्य कहाँ से
प्राप्त की।

3 उन्होंने कहा, "यह तो बस एक साधारण सा बढ़ई है! हम इसे
और इसके परिवार को जानते हैं! हम इसकी माता मरियम
को जानते हैं! हम इसके छोटे भाइयों याकूब, योसेस, यहूदा,
और शमौन को भी जानते हैं! और इसकी छोटी बहनें यहाँ
हमारे बीच में ही रहती हैं!"

4 यीशु ने उनसे कहा, "यह निश्चित रूप से सत्य है कि दूसरे
स्थानों में लोग भविष्यद्वक्ताओं का आदर करते हैं, परन्तु
उनके अपने जन्मस्थान के नगरों में उनका आदर नहीं करते!
यहाँ तक कि उनके कुटुम्बी और उनके घर के लोग भी उनका
आदर नहीं करते!"

5 यद्यपि उसने वहाँ कुछ बीमारों पर अपने हाथ रखकर उन्हें
चंगा किया, परन्तु वह कोई अन्य चमत्कार नहीं कर पाया।

6 वह इस बात पर चकित हुआ कि इतने कम लोगों ने उस पर
विश्वास किया, परन्तु वह उनके गाँवों में जा-जाकर उनको
शिक्षा देता था।

7 एक दिन, यीशु ने 12 चेलों को एक साथ बुलाया। फिर उसने
उनसे कहा कि वह उन्हें दो-दो करके विभिन्न नगरों में शिक्षा
देने के लिए भेजने वाला है। उसने उन्हें उन लोगों में से

दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ्य भी प्रदान की जो दुष्टात्माओं के वश में थे।

8 उसने उन्हें यह निर्देश भी दिया कि जब वे यात्रा करें तो सादे जूते पहनें और लाठी साथ ले जाएँ। उसने उनसे कहा कि भोजन न लेना और न कोई थैला लेना जिसमें उनकी यात्रा के लिए आपूर्ति या कोई धन रखा जाए। उसने उन्हें एक अतिरिक्त कुर्ता भी लेने की अनुमति नहीं दी।

10 उसने उन्हें यह निर्देश भी दिया, "यदि कोई जन तुम्हें अपने घर में ठहरने के लिए आमंत्रित करे, तो जब तक उस नगर से न निकलो तब तक उनके घर में ही रुकना।

11 जहाँ कहीं भी लोग तुम्हारा स्वागत न करें और जहाँ कहीं भी लोग तुम्हारी बातें न सुनें, तो वहाँ से निकलते ही अपने पाँवों की धूल झाड़ दो। ऐसा करके तुम इस बात की गवाही दे रहे होगे कि उन्होंने {न तो तुम्हारा स्वागत किया और न ही तुम्हारे संदेश को ग्रहण किया}।"

12 अतः जब चेले विभिन्न नगरों को गए, तो वे प्रचार करने लगे कि लोग {अपने पापों का} पश्चाताप करें।

13 वे लोगों में से बहुत सी दुष्टात्माओं को भी निकाल रहे थे, और वे बहुत से बीमार लोगों पर जैतून का तेल मलकर चंगा कर रहे थे।

14 तब राजा हेरोदेस अंतिपास ने जो यीशु कर रहा था उसके विषय में सुना। कुछ लोग यीशु के विषय में कह रहे थे, "यह अवश्य ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है! वह मरे हुओं में से जी उठा है! इसी कारण से उसके पास इन चमत्कारों को करने की सामर्थ्य है!"

15 दूसरे लोग कह रहे थे, "यह प्राचीन भविष्यद्वक्ता एलिय्याह है, जिसे फिर से भेजने की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी।" कई अन्य लोग यीशु के विषय में कह रहे थे, "नहीं, नहीं, यह कोई और ही भविष्यद्वक्ता है, यह उन दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के समान है जो बहुत पहले हुए थे।"

16 लोग जो बातें कह रहे थे उसे सुनने के बाद, राजा हेरोदेस अंतिपास ने स्वयं ही से कहा, "उन चमत्कारों को करने वाला वह व्यक्ति अवश्य ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला होगा! मैंने ही तो अपने सैनिकों को उसका सिर काट देने का आदेश दिया था, परन्तु वह फिर से जी उठा है!"

17 क्योंकि बीते समय में राजा हेरोदेस ने यूहन्ना को बंदी बनाकर बंदीगृह में डाल दिया था। उसने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि उसने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी, हेरोदियास से विवाह कर लिया था।

18 हेरोदेस ने यूहन्ना को बंदीगृह में इसलिए डाल दिया था क्योंकि वह हेरोदेस से कह रहा था, "परमेश्वर की व्यवस्था तुझे तेरे भाई की पत्नी से विवाह करने की अनुमति देती है।"

19 परन्तु क्योंकि हेरोदियास यूहन्ना से बदला लेना चाहती थी, इसलिए वह चाहती थी कि कोई उसकी हत्या कर दे। परन्तु वह ऐसा इसलिए नहीं कर पाई क्योंकि जिस समय यूहन्ना बंदीगृह में था, हेरोदेस ने यूहन्ना को उससे बचा रखा था।

20 हेरोदेस ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह यूहन्ना का आदर करता था, और वह जानता था कि वह एक ऐसा धर्मी जन है जिसने स्वयं को परमेश्वर को समर्पित किया हुआ है। जब भी हेरोदेस यूहन्ना की बातें सुनता था, तो वह बहुत व्याकुल हो जाता था, परन्तु उसे यूहन्ना की बातें सुनना अच्छा भी लगता था।

21 यूहन्ना की हत्या होते देखने का अवसर हेरोदियास को तब मिला जब उन्होंने हेरोदेस को उसके जन्मदिन पर सम्मानित किया। उसने सबसे महत्वपूर्ण अधिकारियों, सबसे महत्वपूर्ण सेनापतियों, और गलील जिले के सबसे महत्वपूर्ण लोगों को अपने साथ भोजन करने और उत्सव मनाने के लिए आमंत्रित किया।

22 जिस समय वे भोजन कर रहे थे तब हेरोदियास की पुत्री कमरे में आकर राजा और उसके अतिथियों के सामने नाची। उसने राजा हेरोदेस और उसके अतिथियों को इतना प्रसन्न कर दिया कि उसने उससे कहा, "तेरी जो इच्छा हो मुझसे मांग, और वह मैं तुझे दूँगा!"

23 उसने उससे यह प्रतिज्ञा भी की, "जो कुछ तू मांगेगी, वह मैं तुझे दूँगा! यदि तू मांगेगी तो मैं तुझे अपनी आधी सम्पत्ति और अपना आधा राज्य तक दे दूँगा।"

24 इसके बाद, वह पुत्री अपनी माता, हेरोदियास के पास गई
और जो राजा हेरोदेस ने कहा था उसे बताया। उसने अपनी
माता से पूछा, "मुझे क्या मांगना चाहिए?" उसकी माता ने
प्रतिउत्तर दिया, "राजा से मांग कि वह तुझे यूहन्ना बपतिस्मा
देने वाले का सिर दे दे!"

25 वह लड़की फुर्ती से कमरे में गई और अपनी विनती के साथ
राजा के सम्मुख में सीधे पहुँच गई। उसने कहा, "मैं चाहती हूँ
कि तू किसी को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काटकर
इसी समय परोसने की थाल में रखकर मुझे लाकर देने का
आदेश दे!"

26 जो उसने मांगा था उसे सुनकर राजा बहुत व्याकुल हो गया
क्योंकि वह जानता था कि यूहन्ना बहुत धर्मी जन था। परन्तु वह
उसके निवेदन से इन्कार नहीं कर पाया क्योंकि उसने यह
प्रतिज्ञा की थी कि जो कुछ वह मांगेगी वह उसे देगा, और
उसके अतिथियों ने भी उसकी प्रतिज्ञा को सुना था।

27 अतः राजा ने उसी समय आदेश दिया कि जाकर यूहन्ना का
सिर काट दो और उसे लड़की के पास ले आओ। तब उस
व्यक्ति ने बंदीगृह में जाकर यूहन्ना का सिर काट दिया।

28 वह उसे एक परोसने की थाल में रखकर लेकर आया, और
उस लड़की को दे दिया। वह लड़की उसे अपनी माता के पास
ले गई।

29 जो घटित हुआ था उसे सुनकर यूहन्ना के चेलों ने बंदीगृह में
जाकर यूहन्ना के शव को ले लिया; फिर उन्होंने उसे गाड़
दिया।

30 जिन लोगों को यीशु ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए
चुना था, वे उन स्थानों से लौट आए जहाँ उसने उन्हें भेजा था।
उन्होंने उसे समाचार दिया कि उन्होंने क्या-क्या किया था और
उन्होंने लोगों को क्या-क्या सिखाया था।

31 उसने उनसे कहा, "मेरे साथ ऐसे स्थान को चलो जहाँ कोई
मनुष्य नहीं रहता, ताकि हम एकांत में रहें और थोड़ा विश्राम
कर लें!" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनके पास बहुत से
लोग निरंतर आते रहते थे और फिर चले जाते थे, जिसके
परिणामस्वरूप यीशु और उसके चेलों को भोजन करने या
कुछ और काम करने का समय नहीं मिला।

32 इसलिए वे स्वयं ही एक नाव पर चढ़कर एक ऐसे स्थान को
चले गए जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहता था।

33 परन्तु उनको जाते हुए बहुत से लोगों ने देख लिया। उन्होंने
यह भी पहचान लिया कि वे यीशु और उसके चेले थे, और
उन्होंने देख लिया कि वे कहाँ जा रहे थे। इसलिए आसपास के
नगरों से वे भूमि पर ही उस स्थान की ओर आगे-आगे दौड़े
जहाँ यीशु और उसके चेले जा रहे थे। वास्तव में वे यीशु और
उसके चेलों से पहले ही वहाँ पहुँच गए थे।

34 जब यीशु और उसके चेले नाव पर से उतरे तो यीशु ने एक
बड़ी भीड़ को देखा। उसे उन पर तरस आया क्योंकि वे बिना
चरवाहे की भेड़ों के समान उलझन में थे। इसलिए उसने उन्हें
बहुत सी बातें सिखाईं।

35 दोपहर बीतने पर चेलों ने उसके पास आकर कहा, "यह
एक ऐसा स्थान है जहाँ कोई नहीं रहता, और बहुत देर भी हो
गई है।

36 इसलिए लोगों को विदा कर कि वे आसपास के नगरों और
गाँवों में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें!"

37 परन्तु उसने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, "नहीं, तुम ही उन्हें कुछ
खाने के लिए दो!" उन्होंने उसे प्रतिउत्तर दिया, "यहाँ तक कि
यदि हमारे पास एक व्यक्ति के 200 दिन काम करके कमाया
गया धन भी हो तौभी हम इस भीड़ को खिलाने के लिए पर्याप्त
रोटी नहीं खरीद सकते!"

38 परन्तु उसने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, "तुम्हारे पास कितनी
रोटियाँ हैं? जाकर देखो!" उन्होंने जाकर देखा और फिर
उससे कहा,, "हमारे पास केवल पाँच चपटी रोटियाँ और दो
पकी हुई मछलियाँ हैं!"

39 उसने चेलों को निर्देश दिया कि वे सब लोगों को हरी घास
पर बैठने के लिए कहें।

40 अतः लोग समूहों में बैठ गए। कुछ समूहों में वे 100-100
लोग थे, और दूसरे समूहों में वे 50-50 लोग थे।

41 यीशु ने उन पाँच चपटी रोटियों और दो मछलियों को लिया।
उसने स्वर्ग की ओर देखकर उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद

किया। फिर वह रोटियों और मछलियों को टुकड़ों में तोड़-
तोड़कर चेलों को देता गया ताकि वे उन्हें लोगों में बाँट दें।

42 सब लोगों ने इस भोजन को तब तक खाया जब तक कि वे
खाकर संतुष्ट नहीं हो गए!

43 फिर चेलों ने बचे हुए रोटी और मछली के टुकड़ों से बारह
टोकरियाँ भर लीं।

44 वहाँ लगभग 5, 000 पुरुष थे जिन्होंने रोटी और मछलियाँ
खाई थीं। यहाँ तक कि उन्होंने स्त्रियों और बच्चों को तो गिना
भी नहीं।

45 तुरन्त ही यीशु ने अपने चेलों से नाव पर चढ़ने और फिर
उसके आगे-आगे बैतसैदा नामक नगर को जाने लिए कहा,
जो गलील की झील के पास ही है। उसने रुककर वहाँ
उपस्थित बहुत से लोगों को विदा किया।

46 लोगों को विदा करके वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ों पर
चला गया।

47 जब संध्या हुई, तो चेलों की नाव झील के बीच में थी, और
यीशु भूमि पर अकेला था।

48 जब चेले नाव खे रहे थे तो उसने देखा कि हवा उनके विरुद्ध
बह रही है। इसके परिणामस्वरूप, उन्हें बड़ी कठिनाई हो
रही थी। सुबह में बड़ी भोर को जब अंधेरा ही था, तब वह पानी
पर चलते हुए उनके पास पहुँचा। उसकी मंशा थी कि वह
चलते हुए उनसे आगे निकल जाए।

49 उन्होंने उसे पानी पर चलते हुए देखा, परन्तु उन्होंने सोचा
कि वह कोई भूत है। इसलिए वे चीखने लगे

50 क्योंकि जब उन्होंने उसे देखा तो वे सब के सब डर गए थे।
परन्तु उसने उनसे बात की। उसने उनसे कहा, "शांत हो
जाओ! डरो मत, क्योंकि यह मैं हूँ!"

51 वह नाव पर चढ़कर उनके साथ बैठ गया, और हवा का
बहना बंद हो गया। जो उसने किया था उसके विषय में वे पूरी
रीति से चकित हो गए थे।

52 यद्यपि उन्होंने यीशु को रोटी और मछली की मात्रा बढ़ाते
हुए देखा था, तौभी वे इसका अर्थ न समझ सके, जैसा कि उन्हें
समझना चाहिए था।

53 जब वे नाव में होकर गलील की झील के चारों ओर से आगे
बढ़े, तो वे गन्नेसरत नगर के तट पर आए। तब उन्होंने नाव को
वहीं बांध दिया।

54 जैसे ही वे नाव से उतरे, लोगों ने यीशु को पहचान लिया।

55 इसलिए वे लोगों को यह बताने के लिए सम्पूर्ण जिले में दौड़
गए कि यीशु वहाँ पर है। तब लोगों ने बीमारों को खाटों पर
लिटा दिया और उन्हें उठाकर वहाँ ले गए जहाँ कहीं उन्होंने
लोगों को यह कहते सुना कि यीशु वहाँ है।

56 जिस किसी गाँव, नगर, या बस्तियों के स्थानों में वह गया, वे
लोग वहाँ के बीमारों को बाजारों में ले आते थे। तब बीमार लोग
यीशु से अनुरोध करते थे कि वह उन्हें उसे या उसके वस्त्र के
छोर को छूने दे ताकि यीशु उन्हें चंगा कर दे। जितनों ने उसे
या उसके वस्त्र को छुआ, वे सब के सब चंगे हो गए।

Mark 7:1

1 एक दिन कुछ फरीसी और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले
और यरूशलेम से आए हुए लोग यीशु के पास इकट्ठा हुए।

2 फरीसियों ने देखा कि यीशु के चेले उनकी विशेष परम्परा
के पालन में अक्सर हाथ धोए बिना ही भोजन कर लेते थे।

3 फरीसी और बाकी के सब यहूदी अपने पूर्वजों द्वारा सिखाई
गई उनकी परम्पराओं को सख्ती से पालन करते थे।
उदाहरण के लिए, जब तक वे अपने हाथों को एक विशेष रीति
से धो नहीं लेते थे तब तक भोजन नहीं करते थे,

4 विशेष रूप से उस समय जब वे बाजारों से सामान खरीदकर
लौटते थे। वे सोचते थे कि यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो
परमेश्वर उनसे क्रोधित हो जाएगा, क्योंकि क्या मालूम उन्हें या
जो सामान उन्होंने खरीदा हो उसे किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु
ने छुआ हो जो परमेश्वर को अस्वीकार्य हो।

5 उसी दिन, फरीसियों और यहूदी व्यवस्था का अध्ययन करने
वाले मनुष्यों ने देखा कि उसके कुछ चेले अपने हाथों को
विशेष रीति से धोए बिना भोजन कर रहे थे। इसलिए उन्होंने
यीशु से प्रश्न करते हुए कहा, "तेरे चेले हमारे पूर्वजों की
परम्पराओं की अवज्ञा करते हैं! यदि उन्होंने हमारी रीति से
अपने हाथों को नहीं धोया तो वे भोजन क्यों खा लेते हैं!"

6 यीशु ने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम्हारे पूर्वजों को डांटा था,
और उसके वचन तुम लोगों का वर्णन बड़े अच्छे से करते हैं
जो भले होने का ढोंग करते हैं! उसने इन शब्दों को लिखा जो
परमेश्वर ने कहे थे: 'ये लोग ऐसे बात करते हैं जैसे कि वे मेरा
सम्मान करते हैं, परन्तु वास्तव में वे मेरा सम्मान करने के
विषय में बिलकुल भी नहीं सोचते।

7 उनके लिए मेरी आराधना करना बेकार है, क्योंकि वे केवल
उन्हीं बातों को सिखाते हैं जो लोग कहते हैं, जैसे कि मानो मैंने
उन बातों की आज्ञा दी हो।'

8 अपने पूर्वजों के समान, तुम भी उन बातों का पालन करने से
इन्कार करते हो जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है। बजाए
इसके, तुम केवल उन्हीं परम्पराओं का पालन करते हो जो
दूसरों ने सिखाई हैं।"

9 यीशु ने उनसे यह भी कहा, "तुम सोचते हो कि तुम परमेश्वर
की आज्ञा का पालन करने से इन्कार करने में चतुर हो, ताकि
तुम अपनी परम्पराओं का पालन कर सको!

10 उदाहरण के लिए, तुम्हारे पूर्वज मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा
को लिखा था कि 'अपने पिता और अपनी माता का आदर
करना।' उसने यह भी लिखा था कि 'जो व्यक्ति अपने पिता
और अपनी माता के विषय में बुरी बातें बोले ऐसे मनुष्य को
अधिकारी लोग मृत्युदंड दें।'

11 परन्तु तुम लोगों को सिखाते हो कि यदि तुम अपने माता-
पिता को अपनी वस्तुएँ देने के बजाए उन्हें परमेश्वर को देते हो
तो यह सही बात है। तुम उन्हें अपने माता-पिता से ऐसा कहने
की अनुमति प्रदान करते हो कि 'जो मैं तुम्हें उपबल्ध करवाने
के लिए तुम्हें देने वाला था, अब वह मैंने परमेश्वर को देने की
प्रतिज्ञा की है। इसलिए अब मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर
सकता!'

12 इसके परिणामस्वरूप, तुम वास्तव में लोगों से कह रहे हो
कि अब उन्हें अपने माता-पिता की सहायता करने की
आवश्यकता नहीं है।

13 इस रीति से तुम परमेश्वर की आज्ञा की अवहेलना करते हो!
तुम दूसरों को अपनी बातें सिखाते हो और उनसे कहते हो कि
उन्हें उनका पालन करना चाहिए। और तुम ऐसे ही और भी
बहुत से काम करते हो।"

14 तब यीशु ने फिर से भीड़ को निकट आने के लिए आमंत्रित
किया। फिर उसने उनसे कहा, "तुम सब लोग मेरी बात सुनो!
जो बात मैं तुमको बताने वाला हूँ उसे समझने का प्रयास करो।

15 जो कुछ भी लोग खाते हैं उसके कारण परमेश्वर उनको
अशुद्ध नहीं समझता। इसके विपरीत, यह वही बात है जो
लोगों को अंतर्मन से निकलती है जो परमेश्वर के द्वारा उन्हें
अशुद्ध समझने का कारण बनती है।"

16 [जो कुछ तुमने मुझे कहते हुए सुना है उसके विषय में तुम
सब को ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए।]

17 इसके बाद भीड़ को छोड़कर यीशु अपने चेलों के साथ एक
घर में गया। उन्होंने उससे उस दृष्टांत के विषय में उससे प्रश्न
किया जो उसने अभी बोला था।

18 उसने उनको प्रतिउत्तर दिया, "क्या तुम समझे नहीं कि
इसका क्या अर्थ है? तुम्हें समझना चाहिए कि जो कुछ भी
बाहर से हमारे भीतर प्रवेश करता है, वह परमेश्वर के लिए हमें
अस्वीकार्य मानने का कारण नहीं बन सकता।

19 हमारे मनों में प्रवेश करके उसे बिगाड़ने के बजाए, यह
हमारे पेट में चला जाता है, और बाद में हमारे शरीर से शौच
में बाहर निकल जाता है।" ऐसा कहने के द्वारा, यीशु यह
घोषणा कर रहा था कि परमेश्वर के लिए उनके अस्वीकार्य
होने का कारण हुए बिना लोग कोई भी भोजन खा सकते हैं।

20 उसने यह भी कहा, "यह विचार और कार्य ही होते हैं जो
लोगों के भीतर से निकलते हैं, जो परमेश्वर के लिए उनके
अस्वीकार्य होने का कारण बनते हैं।

21 विशेष रूप से, यह किसी व्यक्ति का सबसे भीतरी अस्तित्व
होता है जो उन्हें बुरी बातें सोचने के लिए प्रेरित करता है; वे
अनैतिक कार्य करते हैं, वे वस्तुएँ चुराते हैं, वे हत्या करते हैं।

22 वे व्यभिचार करते हैं, वे लोभी होते हैं, वे दुर्भावना से कार्य
करते हैं, वे लोगों को धोखा देते हैं। वे अशिष्टता से कार्य करते
हैं, वे लोगों से ईर्ष्या करते हैं, वे दूसरों के बारे में बुरी बातें बोलते
हैं, वे घमंड करते हैं, और वे मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं।

23 लोग इन विचारों को मन में लाते हैं, और फिर इन बुरे कार्यों
को करते हैं, और परमेश्वर के लिए यही उनके अस्वीकार्य होने
का कारण बनता है।"

24 यीशु और उसके चेले गलील से निकलकर, सोर और
सीदोन के नगरों के आसपास के देश में गए। जिस समय वह
एक घर में ठहरा हुआ था, तो वह नहीं चाहता था कि कोई इस
बात को जाने, परन्तु लोगों को शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह
वहाँ था।

25 एक स्त्री ने यीशु के विषय में सुना, जिसकी पुत्री में एक
दुष्टात्मा समाई हुई थी। तुरन्त ही वह यीशु के पास आकर
उसके पाँवों में गिरी।

26 अब वह स्त्री यहूदी नहीं थी। उसके पूर्वज भी यहूदी नहीं
थे। वह स्वयं भी सीरिया जिले के फिनीके प्रांत में जन्मी थी।
उसने यीशु से याचना की कि वह उसकी पुत्री में से दुष्टात्मा को
निकाल दे।

27 उसने उस स्त्री से कहा, "जो कुछ बच्चे खाना चाहें पहले
उन्हें वह खा लेने दे, क्योंकि यह अच्छा नहीं कि कोई उस
भोजन को लेकर जिसे माता ने बच्चों के लिए तैयार किया है
छोटे-छोटे कुत्तों के आगे डाल दे।"

28 उसने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हे महोदय, जो तू कहता है वह
सही है, परन्तु घर के कुत्ते भी तो मेज के नीचे पड़े-पड़े बच्चों
के द्वारा गिराई हुई चूरचार को खाते हैं।"

29 यीशु ने उससे कहा, "जो तूने कहा है उसके कारण, घर
चली जा। मैंने तेरी पुत्री में से उस दुष्टात्मा को निकाल दिया
है।"

30 उस स्त्री ने अपने घर लौटकर देखा कि उसकी लड़की
चुपचाप खाट पर लेटी हुई थी और वह दुष्टात्मा निकल गई थी।

31 यीशु और उसके चेले सोर के आसपास के देश से
निकलकर उत्तर की ओर सीदोन होते हुए, फिर पूर्व की ओर
दस नगरों के क्षेत्र से होते हुए, और फिर दक्षिण की ओर गलील
की झील के पास के नगरों में गए।

32 वहाँ, लोग उसके पास एक व्यक्ति को लेकर आए जो बहरा
था और बोल नहीं सकता था। उन्होंने यीशु से विनती की कि
वह उसे चंगा करने के लिए उस पर अपने हाथ रखे।

33 अतः यीशु उसे भीड़ से दूर ले गया कि वे दोनों अकेले हो
जाएँ। फिर उसने अपनी एक-एक उंगली उस व्यक्ति के
कानों में डाली। अपनी उंगलियों पर थूकने के बाद, उसने
अपनी उंगलियों से उस व्यक्ति की जीभ को छुआ।

34 फिर उसने स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उसकी
ही भाषा में उस व्यक्ति के कान में कहा, "इफ्फत्तह," जिसका
अर्थ है, "खुल जा!"

35 उसी समय वह व्यक्ति साफ-साफ सुनने लगा। वह स्पष्ट
रूप से बोलने भी लगा, क्योंकि जिस कारण से वह बोल नहीं
पाता था, वह ठीक हो गया था।

36 यीशु ने लोगों से कहा कि जो कुछ उसने किया है उसके
विषय में किसी से कहना। यद्यपि उसने बार-बार उन्हें और
दूसरों को इसके विषय में किसी को न बताने का आदेश दिया
था, परन्तु वे इसके बारे में और भी बातें करते रहे।

37 जिन लोगों ने इसके विषय में सुना वे बहुत चकित होकर
कहने लगे, "जो कुछ उसने किया है वह अद्भुत है! दूसरे
आश्चर्यजनक कार्यों के करने के अलावा, वह तो बहरों को भी
सुनने में सक्षम करता है! और जो बोल नहीं सकते उनको वह
बोलने में सक्षम करता है!"

Mark 8:1

1 उन दिनों में, फिर से लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई।
वहाँ दो दिन रहने के बाद, उनके पास खाने के लिए भोजन
नहीं बचा। इसलिए यीशु ने अपने चेलों को अपने पास बुलाकर
उनसे कहा,

2 “तीन दिन से ये लोग मेरे साथ हैं, और उनके पास खाने के
लिए कुछ नहीं बचा है, इसलिए अब मैं उनके लिए बहुत
चिंतित हूँ।

3 यदि मैं इनको भूखा ही घर भेज दूँ, तो उनमें से कुछ लोग
अपने घर के मार्ग में ही मूर्छित हो जाएँगे। उनमें से कुछ लोग
बड़ी दूर-दूर से आए हुए हैं।”

4 उसके चेले जानते थे कि वह यह सुझाव दे रहा था कि वे ही
उन लोगों को कुछ खाने के लिए दें, इसलिए उनमें से एक ने
प्रतिउत्तर दिया, “इस भीड़ को संतुष्ट करने के लिए हम
सम्भवतः भोजन नहीं खोज सकते। इस स्थान में कोई नहीं
रहता!”

5 यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ है?” उन्होंने
प्रतिउत्तर दिया, “हमारे पास सात चपटी रोटियाँ हैं।”

6 यीशु ने भीड़ को आज्ञा दी, “भूमि पर बैठ जाओ!” जब वे बैठ
गए, तो उसने वे सात रोटियाँ लेकर उनके लिए परमेश्वर का
धन्यवाद किया और उनको टुकड़ों में तोड़ा, और उन्हें चेलों
को दिया कि वे उसे लोगों को दें।

7 उन्होंने यह भी देखा कि उनके पास कुछ छोटी मछलियाँ
थीं। अतः उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने के बाद,
उसने अपने चेलों से कहा, “उन्हें ये भी दो।” उनके द्वारा भीड़
को मछलियाँ देने के बाद,

8 लोगों ने वह भोजन खाया, और उन्होंने स्वयं को संतुष्ट करने
के लिए भरपेट खाया। छोड़े गए भोजन के टुकड़ों को उसके
चेलों ने इकट्ठा करके सात बड़ी टोकरियाँ भर लीं।

9 उसके चेलों ने अनुमान लगाया कि उस दिन लगभग 4, 000
लोगों ने भोजन किया है। उसके बाद यीशु ने भीड़ को विदा
कर दिया।

10 इसके तुरन्त बाद, वह अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़ गया,
और वे जलयात्रा करके गलील की झील के पार दलमनूता
जिले में गए।

11 फिर कुछ फरीसी यीशु के पास आए। वे उससे वादविवाद
करने लगे और दबाव बनाने लगे कि वह कोई चमत्कार
दिखाए जिससे प्रकट हो कि उसे परमेश्वर ने भेजा है।

12 यीशु ने अपने में गहरी आह भरी, और फिर उनसे कहा,
“तुम मुझसे कोई चमत्कार दिखाने के लिए क्यों कहते हो? मैं
तुम्हारे लिए कोई चमत्कार नहीं करूँगा!”

13 तब वह उसे छोड़कर चले गए। वह और उसके चेले नाव
पर चढ़ गए और जलयात्रा करके गलील की झील के पार चले
गए।

14 उसके चेले पर्याप्त भोजन लाना भूल गए थे। विशेष रूप से,
उनके पास नाव में केवल एक चपटी रोटी ही थी।

15 जब वे जा रहे थे, तो यीशु ने उन्हें चेतावनी देकर कहा,
“सचेत रहो! फरीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से सावधान
रहो!”

16 उसके चेलों ने उसकी बात को गलत समझा। इसलिए वे
आपस में कहने लगे, “उसने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि
हमारे पास रोटी नहीं है।”

17 यीशु जानता था कि वे आपस में क्या बात कर रहे हैं,
इसलिए उसने उनसे कहा, “तुम पर्याप्त रोटी न होने के बारे में
क्यों बात कर रहे हो? जो बात मैंने अभी कही है तुम्हें उसे
समझना चाहिए! तुम विचार नहीं कर रहे हो!

18 तुम्हारे पास आँखें तो हैं, परन्तु तुम जो देखते हो उसे
समझते नहीं! तुम्हारे पास कान तो हैं, परन्तु जो मैं कहता हूँ
तुम उसे समझते नहीं!” फिर उसने पूछा, “क्या तुम्हें वह
स्मरण नहीं जो घटित हुआ था

19 जब मैंने पाँच रोटियाँ तोड़कर 5, 000 लोगों को खिलाया
था? न केवल सब लोग खाकर संतुष्ट हुए थे, बल्कि वहाँ भोजन
बच भी गया था! तुमने छोड़े हुए रोटी के टुकड़ों की कितनी
टोकरियाँ इकट्ठा की थीं?” उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, “हमने भरी
हुई 12 टोकरियाँ इकट्ठा की थीं।”

20 फिर उसने पूछा, “जब मैंने 4, 000 लोगों को खिलाने के
लिए सात रोटियाँ तोड़ी थीं, तो फिर से जब सब ने भरपेट खा

लिया, उसके बाद रोटी के बचे हुए टुकड़ों की कितनी बड़ी टोकरियों को तुमने इकट्ठा किया था?" उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, "हमने भरी हुई सात बड़ी टोकरियाँ इकट्ठा की थीं।"

21 तब उसने उनसे कहा, "मैं नहीं जानता कि ऐसे कैसे हो सकता है कि तुम अब तक नहीं समझते।"

22 वे बैतसैदा नगर में पहँचे। लोग एक अंधे व्यक्ति को यीशु के पास लेकर आए और उससे विनती की कि वह उसे चंगा करने के लिए उसे छुए।

23 यीशु उस अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़कर उसे नगर से बाहर ले गया। उसने उस व्यक्ति की आँखों पर थूकने के बाद, उस पर अपने हाथ रखे। उसने उससे पूछा, "क्या तू कुछ देखता है?"

24 उस व्यक्ति ने ऊपर देखा, और फिर कहा, "हाँ, मैं लोगों को देखता हूँ! वे इधर-उधर चल-फिर रहे हैं, परन्तु मैं उन्हें साफ-साफ नहीं देख पा रहा हूँ। वे पेड़ों के समान दिखते हैं!"

25 तब यीशु ने फिर से उस अंधे व्यक्ति की आँखों को छुआ। उस व्यक्ति ने बड़े ध्यान से देखा, और उसी घड़ी वह पूरी रीति से चंगा हो गया! वह सबकुछ साफ-साफ देख सकता था।

26 यीशु ने उससे कहा, "नगर में मत जाना!" फिर उसने उस व्यक्ति को उसके घर भेज दिया।

27 यीशु और उसके चेले बैतसैदा से निकलकर कैसरिया फिलिप्पी नगर के निकट के गाँवों में गए। मार्ग में उसने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"

28 उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है। दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह भविष्यद्वक्ता है। और अन्य लोग करते हैं कि तू पहले वाले भविष्यद्वक्ताओं में से कोई है।"

29 उसने उनसे पूछा, "तुम्हारा क्या कहना है? तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस ने उसे उत्तर दिया, "हम विश्वास करते हैं कि तू ही मसीह है!"

30 तब यीशु ने उन्हें सख्ती से चेतावनी दी कि वे किसी से न कहें कि वह मसीह है।

31 फिर वह उन्हें शिक्षा देने लगा कि वह, अर्थात मनुष्य का पुत्र, निश्चय ही बहुत दुःख उठाएगा। वह पुरनियों, प्रधान याजकों, और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों के द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा। यहाँ तक कि उसे मार डाला जाएगा, परन्तु मरने के बाद तीसरे दिन वह फिर से जीवित हो जाएगा।

32 उसने उनसे यह बात स्पष्ट रूप से कह दी। परन्तु पतरस यीशु को एक ओर ले जाकर इस रीति से बात करने के लिए उसे झिड़कने लगा।

33 यीशु ने मुड़कर अपने चेलों की ओर देखा। फिर उसने पतरस को यह कहकर डांटा, "इस प्रकार से सोचना बंद कर! इस रीति से बात करने के लिए तुझे शैतान प्रेरित कर रहा है! जो परमेश्वर मुझसे करवाना चाहता है उसे करने की इच्छा के बजाए, तू चाहता है कि मैं वह करूँ जो लोग मुझसे करवाना चाहते हैं।"

34 फिर उसने अपने चेलों के साथ भीड़ को इकट्ठा किया कि वे उसकी सुनें। उसने उनसे कहा, "यदि तुम में से कोई मेरा चेला बनना चाहता है, तो तुम्हें केवल वही काम नहीं करना है जिससे तुम्हारा जीवन व्यतीत करना सरल हो जाए। तुम्हें उन अपराधियों के समान पीड़ा सहने के लिए भी तैयार रहना है जिन्हें उन स्थानों पर क्रूस ढोकर ले जाने के लिए विवश किया जाता है जहाँ उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। जो कोई भी मेरा चेला बनना चाहता है उसे ऐसा ही करना है।

35 तुम्हें ऐसा इसलिए करना है क्योंकि जो इस बात का इन्कार करके कि वे मुझसे जुड़े हुए हैं अपने जीवन को बचाने का प्रयास करते हैं वे अपना जीवन खोएँगे। जिनकी हत्या इसलिए कर दी जाती है क्योंकि वे मेरे चेले हैं और क्योंकि वे दूसरों को शुभ संदेश सुनाते हैं वे मेरे साथ सर्वदा जीवित रहेंगे।

36 लोग इस संसार में वह सबकुछ प्राप्त कर सकते हैं जो वे चाहते हैं, परन्तु यदि वे अनंत जीवन को प्राप्त नहीं करते तो वास्तव में वे कुछ भी प्राप्त नहीं करते!

37 इस तथ्य के विषय में ध्यानपूर्वक विचार करो कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो लोग परमेश्वर को दें जिससे कि उन्हें अनंत जीवन प्राप्त हो!

38 और इस विषय में विचार करो: बहुत से लोग यह कहने से
इन्कार करते हैं कि वे मुझसे जुड़े हुए हैं। इन दिनों में जब बहुत
से लोग परमेश्वर से दूर हो गए हैं और पाप में जीवन व्यतीत
कर रहे हैं, तो वे मेरी बातों को अस्वीकार करते हैं, तो मैं,
अर्थात मनुष्य का पुत्र, भी यह कहने से इन्कार कर दूँगा कि वे
मुझसे जुड़े हुए हैं जब मैं पवित्र स्वर्गदूतों के साथ और उस
महिमा सहित जो मेरे पिता के पास है वापस आऊँगा!"

Mark 9:1

1 यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से यह भी कहा, "ध्यान
लगाकर सुनो! अब तुममें से कुछ जो यहाँ उपस्थित हैं इससे
पहले कि परमेश्वर को सामर्थी रूप से शासन करते हुए न देख
लें तब तक न मरेंगे!"

2 छः दिन बाद यीशु अपने साथ पतरस, याकूब, और याकूब
के भाई, यूहन्ना को लेकर एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। जिस
समय वे वहाँ ऊपर अकेले थे तो वह उन्हें बहुत अलग रूप में
दिखाई दिया।

3 उसके वस्त्र चमकीले सफेद हो गए। वह पृथ्वी की किसी भी
वस्तु से इतने अधिक सफेद थे कि कोई विरंजन भी वैसा
सफेद न कर पाए।

4 मूसा और एलिय्याह, ये दो भविष्यद्वक्ता जो बहुत समय पूर्व
रहते थे, उनके सामने प्रकट हुए। फिर वे यीशु से बातें करने
लगे।

5 थोड़े समय के बाद पतरस ने कहा, "हे गुरु, यहाँ होना बड़ा
अद्भुत है! इसलिए हमें तीन मंडप बनाने की अनुमति प्रदान
कर। जिसमें से एक तेरे लिए होगा, एक मूसा के लिए होगा,
और एक एलिय्याह के लिए होगा!"

6 उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह कुछ कहना चाहता था,
परन्तु नहीं जानता था कि क्या कहे, क्योंकि वह और बाकी के
दो चेले बहुत डर गए थे।

7 तब एक बादल ने प्रकट होकर उन्हें ढांप लिया। परमेश्वर ने
उस बादल में से यह कहकर उनसे बात की, "यह मेरा पुत्र है।
यही है जिससे मैं प्रेम करता हूँ। इसलिए, जो वह कहता है तुम्हें
उस पर ध्यान देना चाहिए!"

8 जब उन तीनों चेलों ने चारों ओर दृष्टि की, तो एकाएक उन्होंने
देखा कि केवल यीशु ही उनके साथ है, और एलिय्याह एवं
मूसा अब वहाँ नहीं हैं।

9 जिस समय वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, तब यीशु ने उनसे
कहा कि जो अभी-अभी उसके साथ घटित हुआ है वह बात
किसी से न कहना। उसने कहा, "जब मैं, अर्थात मनुष्य का
पुत्र, मेरे मरने के बाद फिर से जीवित हो जाऊँ, तब तुम उनसे
यह बात कह सकते हो।"

10 अतः उन्होंने बहुत समय तक दूसरों को यह बात नहीं
बताई। परन्तु उन्होंने आपस में चर्चा की कि इस बात का क्या
अर्थ है जब उसने कहा कि वह मरे हुओं में से जी उठेगा।

11 उन तीन चेलों ने यीशु से पूछा, "यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले
मनुष्य कहते हैं कि मसीह के पृथ्वी पर आने से पहले एलिय्याह
का पृथ्वी पर वापस आना आवश्यक है, {परन्तु हमने अभी-
अभी एलिय्याह को देखा है,} तो जो वे सिखा रहे हैं क्या वह
गलत है?"

12 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यह सच है कि परमेश्वर ने
एलिय्याह को पहले आकर सबकुछ जैसा होना चाहिए वैसा
करने के लिए भेजने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु एलिय्याह पहले
ही आ चुका है, और हमारे अगुवों ने उसके साथ बहुत बुरा
बर्ताव किया, जैसा कि वे करना चाहते थे जैसा बहुत समय
पहले भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था कि वे करेंगे। परन्तु
पवित्रशास्त्र में मेरे, अर्थात मनुष्य के पुत्र के विषय में बहुत
कुछ लिखा हुआ है। पवित्रशास्त्र कहता है कि मैं बहुत दुःख
उठाऊँगा और लोग मुझे अस्वीकार कर देंगे।"

14 उसके बाद यीशु और उसके तीनों चेले वहाँ पहुँच गए जहाँ
दूसरे चेले उपस्थित थे। उन्होंने दूसरे चेलों के आसपास एक
बड़ी भीड़ को देखा और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले कुछ
मनुष्य उनसे वाद-विवाद कर रहे थे।

15 यीशु को आते देखकर भीड़ बहुत चकित हो गई। इसलिए
वे दौड़कर उसके पास गए और उसे नमस्कार किया।

16 यीशु ने उनसे पूछा, "तुम किस विषय पर वाद-विवाद कर
रहे हो?"

17 भीड़ में से एक व्यक्ति ने उसे उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं यहाँ तेरे पास अपने पुत्र को लेकर आया था {ताकि तू उसे चंगा कर दे}। उसमें एक दुष्टात्मा समाया हुआ है जिसके कारण वह बोल नहीं पाता।

18 जब भी वह दुष्टात्मा उसे वश में करता है तो उसे नीचे गिरा देता है। वह मुँह से झाग निकालता है, और दाँत पीसता है, और अकड़ जाता है। मैंने तेरे चेलों से उस दुष्टात्मा को निकालने की विनती की थी, परन्तु वे ऐसा नहीं कर पाए।"

19 यीशु ने यह कहकर उन्हें प्रतिउत्तर दिया, "हे अविश्वासी लोगों! मैं तुम्हारी विश्वासहीनता से बहुत थक गया हूँ! उस लड़के को मेरे पास लेकर आओ।"

20 अतः वे उस लड़के को यीशु पास लेकर आए। जैसे ही उस दुष्टात्मा ने यीशु को देखा, उसने उस लड़के को जोर से झटका, और वह लड़का भूमि पर गिर पड़ा। वह इधर-उधर लुढ़कने और मुँह से झाग निकालने लगा।

21 यीशु ने उस लड़के के पिता से पूछा, "इसकी ऐसी दशा कब से है?" उसने प्रतिउत्तर दिया, "ऐसा होना तब आरम्भ हुआ जब वह छोटा बच्चा ही था।

22 वह दुष्टात्मा केवल ऐसा ही नहीं करता, बल्कि वह उसे मार डालने के लिए बहुत बार उसे आग में या पानी में फेंक देता है। यदि तू कर सके, तो हम पर दया करके हमारी सहायता कर!"

23 यीशु ने उससे कहा, "निःसंदेह मैं कर सकता हूँ! परमेश्वर उन लोगों के लिए कुछ भी कर सकता है जो यह विश्वास करते हैं कि वह ऐसा करने में सक्षम है!"

24 उस बालक का पिता तुरन्त चिल्लाया, "मैं विश्वास करता हूँ कि तू ही मेरी सहायता कर सकता है, परन्तु मैं दृढ़तापूर्वक विश्वास नहीं करता। मेरी सहायता कर कि मैं अधिक दृढ़ता से विश्वास करूँ!"

25 यीशु ने देखा कि भीड़ बढ़ रही है। उसने उस दुष्टात्मा को झिड़का: "हे दुष्टात्मा, तू इस लड़के को बहरा और बोलने में असमर्थ कर रहा है! मैं तुझे इसमें से निकल जाने की और फिर कभी इसमें प्रवेश न करने की आज्ञा देता हूँ!"

26 उस दुष्टात्मा ने चिल्लाकर उस लड़के को हिंसक रूप से हिलाया, और फिर वह उस लड़के में से निकल गया। वह लड़का एक मृत देह के समान हो गया। इसलिए वहाँ पर उपस्थित अधिकांश लोगों ने कहा, "वह मर गया है!"

27 हालाँकि, यीशु ने उस लड़के को हाथ से पकड़कर खड़े होने में उसकी सहायता की। फिर वह लड़का खड़ा हो गया।

28 बाद में, जब यीशु और उसके चेले एक घर में अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा, "हम उस दुष्टात्मा को निकालने में सक्षम क्यों नहीं हुए?"

29 यीशु ने उनसे कहा, "तुम इस प्रकार की दुष्टात्मा को केवल भोजन से परहेज करने और परमेश्वर से प्रार्थना करने के द्वारा ही निकाल सकते हो। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है जिससे तुम उन्हें निकाल सको।"

30 यीशु और उसके चेलों ने उस देश से निकलकर, गलील देश से होते हुए यात्रा की। यीशु नहीं चाहता था कि किसी को यह बात मालूम हो कि वह कहाँ है।

31 यीशु अपने चेलों को शिक्षा देने के लिए समय चाहता था। वह उनसे कहने लगा, "किसी दिन मेरे शत्रु मुझे बंदी बना लेंगे, और मैं दूसरे मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया जाऊँगा। वे मनुष्य मेरी हत्या कर देंगे। परन्तु मेरे मरने के बाद तीसरे दिन, मैं फिर से जीवित हो जाऊँगा!"

32 चेले समझ नहीं पाए कि यीशु उनसे क्या कह रहा था, और वे उससे पूछने से डरते थे कि उसके कहने का क्या अर्थ है।

33 उसके बाद यीशु और उसके चेले लौटकर कफरनहूम नगर में आए। जिस समय वे घर में थे, तब यीशु ने उनसे पूछा, "जब हम सड़क पर यात्रा कर रहे थे तब तुम क्या बातें कर रहे थे?"

34 परन्तु चेलों ने प्रतिउत्तर नहीं दिया। वे प्रतिउत्तर देने में लज्जा महसूस कर रहे थे क्योंकि यात्रा करते समय, वे आपस में इस बात पर वाद-विवाद कर रहे थे कि उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कौन है।

35 यीशु बैठ गया। उसने अपने 12 चेलों को अपने पास बुलाया, और फिर उनसे कहा, "यदि कोई जन चाहता है कि परमेश्वर उसे सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति समझे, तो उसे स्वयं को सबसे कम महत्वपूर्ण मानना चाहिए, और उसे बाकी सब लोगों की सेवा करनी चाहिए।"

36 फिर यीशु ने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा कर दिया। उसने उस बालक को गोद में लिया, और फिर उनसे कहा,

37 "जो कोई इस प्रकार के बालक का इसलिए स्वागत करता है, क्योंकि वे मुझसे प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर मानता है कि वे मेरा स्वागत कर रहे हैं। जो कोई मेरा स्वागत करता है, तो वह मानो परमेश्वर का स्वागत कर रहा है, जिसने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है।"

38 यूहन्ना ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हमने किसी व्यक्ति को लोगों में से दुष्टात्माएँ निकालते देखा है। वह दावा करता है कि उसे ऐसा करने का अधिकार तुझसे मिला है। इसलिए हमने उसे ऐसा करने से रोका, क्योंकि वह हम चेलों में से एक नहीं था।"

39 यीशु ने कहा, "उसे ऐसा करने से मत रोको। क्योंकि कोई भी व्यक्ति मेरे अधिकार से कोई सामर्थी काम करने के तुरन्त बाद मेरे विषय में बुरी बातें नहीं बोलेगा।

40 जो हमारा विरोध नहीं करते वे उन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं जो हम कर रहे हैं।

41 परमेश्वर निश्चय ही उन लोगों को प्रतिफल देगा जो किसी भी प्रकार से तुम्हारी सहायता करते हैं, यहाँ तक कि यदि वे साधारण रूप से तुम्हें एक कटोरा पानी इसलिए पिलाएँ क्योंकि तुम मेरा, अर्थात मसीह का अनुसरण करते हो!"

42 यीशु ने यह भी कहा, "परन्तु यदि तुम मुझ पर विश्वास करने वाले जन के सामने पाप करने का कारण रखोगे{, तो परमेश्वर तुम्हें कठोर दंड देगा}। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे गले में एक बहुत भारी पत्थर बांधकर तुम्हें समुद्र में फेंक दे, तो यह तुम्हारे लिए उससे बेहतर होगा, जब परमेश्वर तुम्हें मुझ पर विश्वास करने वाले जन के सामने पाप करने का कारण रखने के लिए दंड देगा।

43 इसलिए यदि तुम पाप करने के लिए अपने एक हाथ का उपयोग करना चाहो तो उसका उपयोग मत करना! यहाँ तक कि यदि तुम्हें पाप करने से बचने के लिए अपना हाथ काटकर फेंकना भी पड़े, तो ऐसा कर देना! यह बेहतर है कि तुम अनंतकाल तक जीवित रहो, भले ही पृथ्वी पर रहते हुए तुम्हारे पास एक हाथ न हो। परन्तु यह अच्छा नहीं होगा कि तुम पाप करो और उसके परिणामस्वरूप परमेश्वर तुम्हारी समूची देह को नरक में फेंक दे। वहाँ की आग कभी नहीं बुझती!

44 [वह एक ऐसा स्थान है जहाँ कीड़े उन्हें खाना बंद नहीं करते, और उन्हें जलाने वाली आग कभी नहीं बुझती।]

45 यदि तुम पाप करने के लिए अपने एक पाँव का उपयोग करना चाहो तो अपने पाँव का उपयोग करने से रुक जाना! यहाँ तक कि यदि तुम्हें पाप करने से बचने के लिए अपना पाँव काटकर फेंकना भी पड़े, तो ऐसा कर देना! यह अच्छा है कि तुम {पाप न करो और} अनंतकाल तक जीवित रहो, भले ही पृथ्वी पर रहते हुए तुम्हारे पास एक पाँव न हो। परन्तु यह अच्छा नहीं होगा {कि तुम पाप करो और उसके परिणामस्वरूप} परमेश्वर तुम्हारी समूची देह को नरक में फेंक दे।

46 [जहाँ कीड़े उन्हें खाना बंद नहीं करते, और उन्हें जलाने वाली आग कभी नहीं बुझती।]

47 यदि जो तुम देखते हो उसके कारण तुम पाप की परीक्षा में पड़ो, तो उन वस्तुओं की ओर देखने से रुक जाओ! रुक जाओ यहाँ तक कि यदि तुम्हें पाप करने से बचने के लिए अपनी आँख को निकालकर फेंकना पड़े, तो ऐसा कर देना! केवल एक आँख लेकर उस राज्य में प्रवेश करना बेहतर है जिस पर परमेश्वर शासन करता है, बजाए इसके कि दो आँखें हों और वह तुम्हें नरक में फेंक दे।

48 उस स्थान में वहाँ कीड़े लोगों को हमेशा खाते रहते हैं और वहाँ आग कभी नहीं बुझती।

49 तुम्हें कठिनाइयों को सहन करना होगा ताकि परमेश्वर तुमसे प्रसन्न हो जाए। तुम्हारी कठिनाइयाँ वस्तुओं को शुद्ध करने वाली आग के समान है। तुम्हारा धीरज वैसा ही है जैसे लोग अपने बलिदानों पर नमक डालकर उन्हें शुद्ध करते हैं।

50 नमक भोजन में डालने के लिए उपयोग होता है, परन्तु यदि वह स्वादहीन हो जाए तो तुम फिर से उसे नमकीन नहीं कर

सकते। उसी रीति से, तुम्हें परमेश्वर के लिए उपयोगी बने रहना है, क्योंकि यदि तुम बेकार हो गए तो फिर से परमेश्वर के लिए उपयोगी कैसे बनोगे। तुम्हें एक दूसरे के साथ शांति से भी जीवन व्यतीत करना चाहिए।"

Mark 10:1

1 यीशु अपने चेलों के साथ उस स्थान से निकल गया, और वे यहूदिया देश से होते हुए यरदन नदी के पूर्व की ओर गए। जब उसके पास लोगों की भीड़ फिर से इकट्ठा हो गई, तो जैसा वह नियमित रूप से किया करता था, वैसे ही वह उन्हें फिर से शिक्षा देने लगा।

2 जिस समय यीशु शिक्षा दे रहा था, तो कुछ फरीसी उसके पास आकर पूछने लगे, "क्या हमारी व्यवस्था किसी पुरुष को अपनी पत्नी को तलाक देने की अनुमति प्रदान करती है?" उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा ताकि वे उसकी आलोचना में सक्षम हों, चाहे वह "हाँ" में उत्तर दे या "नहीं" में।

3 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हारे पूर्वजों को ऐसे पुरुष के विषय में क्या आज्ञा दी है जो अपनी पत्नी को तलाक देता है?"

4 उनमें से एक ने प्रतिउत्तर दिया, "मूसा ने अनुमति दी है कि ऐसा पुरुष एक त्यागपत्र लिखे ताकि वह उसे विदा कर सके।"

5 यीशु ने उनसे कहा, "ऐसा तुम्हारे हठीले स्वभाव के कारण ही था कि मूसा ने तुम्हारे लिए वह नियम ठहराया।

6 यह स्मरण रखो कि जब परमेश्वर ने सबसे पहले मनुष्यों को रचा, तो उसने एक पुरुष की सृष्टि की, और उस पुरुष की पत्नी होने के लिए उसने एक स्त्री की सृष्टि की।

7 इसी से मालूम होता है कि परमेश्वर ने क्यों कहा कि 'जब कोई स्त्री-पुरुष विवाह करते हैं, तो उन्हें विवाह के बाद अपने माता-पिता के साथ नहीं रहना चाहिए।

8 बजाए इसके, वे दोनों एक साथ रहेंगे, और वे इतने घनिष्ठ रूप से एक हो जाएँगे कि वे एक ही व्यक्ति के समान हो जाएँगे।' इसी कारण से, यद्यपि जो लोग विवाह करते हैं पहले वे अलग-अलग व्यक्ति थे, परन्तु विवाह के बाद परमेश्वर उन्हें एक व्यक्ति के रूप में मानता है{, इसलिए वह चाहता है कि वे एक दूसरे से विवाहित बने रहें}।

9 क्योंकि यह सच है कि एक पुरुष को अपनी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहिए। परमेश्वर ने उन्हें एक साथ जोड़ा है, और वह चाहता है कि वे एक साथ रहें!"

10 जब यीशु और उसके चेले घर में अकेले थे, तो उन्होंने उससे इसके विषय में फिर से पूछा।

11 यीशु ने उनसे कहा, "परमेश्वर मानता है कि जो पुरुष अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी स्त्री से विवाह करता है वह व्यभिचार करता है।

12 परमेश्वर यह भी मानता है कि जो स्त्री अपने पति को तलाक देकर दूसरे पुरुष से विवाह करती है वह भी व्यभिचार करती है।"

13 फिर लोग बच्चों को यीशु के पास लेकर आने लगे कि वह उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें आशीष दे। परन्तु उसके चेलों ने उन लोगों को डांटा।

14 जब यीशु ने यह देखा तो वह क्रोधित हो गया। उसने अपने चेलों से कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो! उन्हें मना मत करो! ऐसे ही लोग जो विनम्र और परमेश्वर पर भरोसा करते होंगे जैसे कि ये करते हैं वे ही अपने जीवन में परमेश्वर के शासन का अनुभव कर सकते हैं।

15 इस बात को ध्यान में रखो: जो लोग अपने ऊपर परमेश्वर के शासन का स्वागत बच्चों के समान नहीं करते—वे निश्चित रूप से उस राज्य में जिस पर परमेश्वर शासन करता है प्रवेश नहीं करेंगे।"

16 उसके बाद यीशु ने बच्चों को अपनी गोद में उठा लिया। उसने उन पर अपने हाथ भी रखे और परमेश्वर से उनका भला करने की विनती की।

17 जब यीशु अपने चेलों के साथ फिर से यात्रा करना आरम्भ कर रहा था, तब एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया। उसने यीशु के आगे घुटने टिकाकर उससे पूछा, "हे उत्तम

गुरु, मैं क्या करूँ जिससे कि मैं अनंतकाल तक परमेश्वर के साथ रह सकूँ?"

18 यीशु ने उससे कहा, "तू नहीं जानता कि तू मुझे उत्तम कहकर क्या बोल रहा है! केवल परमेश्वर ही उत्तम है!

19 {परन्तु तेरे प्रश्न के उत्तर में,} तू मूसा की आज्ञाओं को तो जानता है: 'किसी की हत्या न करना, व्यभिचार न करना, किसी का सामान न चुराना, किसी बात के विषय में झूठ न बोलना, किसी को धोखा न देना, और अपने माता-पिता के प्रति आदरभाव रखना।'"

20 उस मनुष्य ने कहा, "हे गुरु, मैं तो अपने लड़कपन से ही इन सब आज्ञाओं का पालन करता आया हूँ।"

21 यीशु ने उसकी ओर स्नेहभरी दृष्टि से देखा। उसने उससे कहा, "एक बात है जो अब तक तूने नहीं की है। घर जाकर अपनी सारी सम्पत्ति बेच दे, और उसके बाद वह धन गरीब लोगों को दे दे। इसके परिणामस्वरूप, तू स्वर्ग में आत्मिक रूप से समृद्ध होगा। जो मैंने तुझसे कहा है, उसके करने के बाद, मेरे साथ हो ले और मेरा चेला बन जा!"

22 यीशु के निर्देशों से वह मनुष्य उदास हो गया। वह बड़े दुःख के साथ चला गया, क्योंकि वह अपना धन नहीं दे सकता था।

23 यीशु ने चारों ओर के लोगों को देखा। फिर उसने अपने चेलों से कहा, "जो लोग धनी होते हैं उनके लिए स्वयं को परमेश्वर के शासन के अधीन रखना अत्यंत कठिन होता है।"

24 जो यीशु ने कहा था उससे चेले चकित हो गए। {वे सोचते थे कि परमेश्वर धनी लोगों का पक्ष लेता है, इसलिए यदि परमेश्वर उनका उद्धार नहीं करता, तो वह किसी का भी उद्धार नहीं करेगा।} यीशु ने फिर से कहा, "हे प्रिय विश्वासियों, तुम जो मेरी देखरेख में हो, किसी भी व्यक्ति के लिए यह निर्णय लेना अत्यंत कठिन होता है कि वह अपने जीवन में परमेश्वर को शासन करने दे।

25 ऊँट जैसे बड़े विशाल पशु का सिलाई की सुई के छोटे से छेद से गुजरना असम्भव है। धनी लोगों के लिए यह निर्णय लेना लगभग उतना ही कठिन है कि वे परमेश्वर को अपने जीवन पर शासन करने दें।"

26 चेले बड़े विस्मित हो गए। इसलिए उन्होंने यीशु से कहा, "यदि ऐसा है, तो फिर कोई व्यक्ति कैसे उद्धार पाएगा!"

27 यीशु ने उन पर दृष्टि की, और फिर उसने कहा, "हाँ, लोगों के लिए स्वयं का उद्धार करना असम्भव है! परन्तु परमेश्वर निश्चित रूप से उनका उद्धार कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर कुछ भी कर सकता है!"

28 पतरस ने कहा, "देख, हम तो सबकुछ पीछे छोड़कर तेरे चेले बन गए हैं।"

29 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो: जिन्होंने अपने घरों को, अपने भाइयों को, अपनी बहनों को, अपने पिता को, अपनी माता को, अपने बच्चों को, और अपनी भूमि के टुकड़े को मेरा चेला बनने और शुभ संदेश का प्रचार करने के लिए छोड़ दिया है,

30 वे इस जीवन में उसका सौ गुणा प्राप्त करेंगे जितना उन्होंने पीछे छोड़ दिया है। इसमें घर और परिवार के सदस्य: भाई और बहनें और माताएँ और बच्चे, और भूमि के टुकड़े भी शामिल हैं। इसके साथ ही, लोग उनको {यहाँ पृथ्वी पर इसलिए सताएँगे क्योंकि वे मुझ पर विश्वास करते हैं}, परन्तु भविष्यकाल में परमेश्वर के साथ अनंतकाल का जीवन बिताएँगे।

31 कई लोग जिनको दूसरे लोग बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं वे परमेश्वर के द्वारा महत्वहीन माने जाएँगे, और कई लोग जिनको दूसरे लोग महत्वहीन मानते हैं वे परमेश्वर के द्वारा बहुत महत्वपूर्ण माने जाएँगे!"

32 जब वे यात्रा करते रहे तो कुछ दिनों के बाद, यीशु और उसके चेले यरूशलेम जाने वाले मार्ग पर जा रहे थे। यीशु उनके आगे-आगे जा रहा था। चेले अचम्भित थे और जो अन्य लोग उनके साथ थे वे डरे हुए थे। मार्ग में यीशु 12 चेलों को फिर से एकांत में एक स्थान पर ले गया। फिर वह उन्हें बताने लगा कि उसके साथ क्या होने वाला है।

33 उसने कहा, "ध्यान लगाकर सुनो! हम यरूशलेम जा रहे हैं। वहाँ प्रधान याजक और यहूदी व्यवस्था के शिक्षक मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को बंदी बना लेंगे। वे इस बात की घोषणा करेंगे कि मुझे मर जाना चाहिए। उसके बाद वे मुझे रोमी अधिकारियों के पास ले जाएँगे।

34 उनके लोग मेरा उपहास करेंगे और मुझ पर थूकेंगे। वे मुझे
कोड़े मारेंगे, और उसके बाद वे मुझे मार डालेंगे। परन्तु इसके
बाद तीसरे दिन, मैं फिर से जी उठूँगा!"

35 मार्ग में, जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने, यीशु के पास
आकर उससे कहा, "हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो हम तुझसे
हमारे लिए करने को कहें वह तू हमारे लिए करे!"

36 यीशु ने उनसे कहा, "वह क्या बात है जो तुम चाहते हो कि
मैं तुम्हारे लिए करूँ?"

37 उन्होंने उससे कहा, "जब तू प्रतापी होकर राज्य करे, तो
हम में से एक तेरी दाईं ओर बैठे तथा दूसरा तेरी बाईं ओर
बैठे।"

38 परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "तुम समझते नहीं कि तुम क्या
मांग रहे हो।" {फिर उसने उनसे पूछा,} "क्या तुम दुःख उठा
सकते हो जैसे मैं दुःख उठाने वाला हूँ? क्या तुम सह सकते हो
कि लोग तुम्हारी हत्या कर दें जैसे वे मेरी हत्या करेंगे?"

39 उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम ऐसा करने में सक्षम हैं!" तब
यीशु ने कहा, "यह सच है कि तुम भी वैसे ही दुःख उठाओगे
जैसे मैं दुःख उठाऊँगा, और तुम सह लोगे कि लोग तुम्हारी
हत्या कर दें जैसे वे मेरी हत्या करेंगे।

40 परन्तु वह मैं नहीं हूँ जो इस बात का चुनाव करता है कि मेरे
पास कौन बैठेगा। परमेश्वर उन लोगों को वह स्थान प्रदान
करेगा जिन्हें वह पहले से ही चुन लेगा।"

41 बाकी के दस चेलों ने बाद में सुना कि यूहन्ना और याकूब ने
क्या अनुरोध किया था। {जिसके परिणामस्वरूप,} वे उन पर
क्रोधित थे।

42 फिर जब यीशु ने उन सब को एक साथ बुलाया, तो उसने
उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो लोग गैर-यहूदियों पर
शासन करते हैं उन्हें स्वयं को शक्तिशाली दिखाने में आनंद
आता है। तुम यह भी जानते हो कि उनके अधिकारियों को
दूसरों को आदेश देने में आनंद आता है।

43 परन्तु तुम उनके जैसे मत बनो! इसके विपरीत, यदि तुम में
से कोई जन महानता को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे स्वयं
को दूसरों का सेवक समझना चाहिए।

44 और, यदि तुम में से कोई चाहता है कि परमेश्वर उसे सबसे
महत्वपूर्ण समझे, तो वह तुम में से बाकी के लोगों के लिए दास
का काम करे।

45 यहाँ तक कि मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र भी, सेवा करवाने
नहीं, परन्तु सेवा करने आया हूँ, और लोगों के पाप के लिए
भुगतान के रूप में मरने के लिए आया हूँ, और उन्हें उस दंड
से छुड़ाने के लिए मोल लेने के लिए आया हूँ जिसे परमेश्वर ने
पापियों के लिए ठहराया है।

46 यरूशलेम जाने के मार्ग में यीशु और उसके चेले यरीहो
नगर में पहुँचे। फिर, जब वे बड़ी भीड़ के साथ यरीहो से
निकल रहे थे, तो एक मनुष्य जो देख नहीं सकता था और
अक्सर लोगों से पैसे मांगता था, सड़क के किनारे बैठा हुआ
था। उसका नाम बरतिमाई था, और उसके पिता का नाम
तिमाई था।

47 जब उसने लोगों को यह कहते हुए सुना कि यीशु नासरी जा
रहा है, तो वह ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "हे यीशु! तू जो
दाऊद का वंशज है, मेरी सहायता कर!"

48 बहुत से लोगों ने उसे डांटा और उसे कहा कि चुप रहे।
बजाए इसके, वह और भी ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "तू जो
दाऊद का वंशज है, मुझ पर दया कर!"

49 यीशु ने रुककर कहा, "उसे यहाँ आने के लिए कहो!"
उन्होंने उस अंधे मनुष्य को यह कहकर बुलाया, "यीशु तुझे
बुला रहा है! इसलिए प्रसन्न हो जा और खड़ा हो और चल!"

50 जब वह उछलकर खड़ा हुआ तो उसने अपने वस्त्रों को एक
ओर फेंक दिया, और वह यीशु के पास आया।

51 यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरी सहायता
कैसे करूँ?" उस अंधे मनुष्य ने उससे कहा, "हे गुरु, मैं फिर
से देखने में सक्षम होना चाहता हूँ!"

52 यीशु ने उससे कहा, “क्योंकि तूने मुझ पर भरोसा किया, इसलिए मैंने तुझे चंगा कर दिया है! इसलिए तू जा सकता है!” तुरन्त ही वह देखने लगा। और वह मार्ग पर यीशु के साथ चला गया।

Mark 11:1

1 जब यीशु और उसके चेले यरूशलेम के निकट आए, तो वे जैतून पहाड़ के पास बैतफगे और बैतनिय्याह के गाँवों में पहुँचे। तब यीशु ने अपने दो चेलों को उनके आगे-आगे भेजा।

2 यीशु ने उनसे कहा, “हमारे सामने वाले उस गाँव में जाओ। जैसे ही तुम उसमें प्रवेश करोगे, तुम्हें वहाँ एक जवान गधा बंधा हुआ दिखाई देगा। वह एक ऐसा पशु है जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर मेरे पास ले आओ।

3 यदि कोई तुमसे पूछे कि ‘तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?’ तो कहना कि ‘यीशु को इसकी आवश्यकता है। जैसे ही इसकी आवश्यकता नहीं रहेगी, वह इसे किसी के साथ वापस भेज देगा।’”

4 अतः वे दोनों चेले गए, और उन्हें वह गधा मिल गया। वह एक घर के निकट बंधा हुआ गली में खड़ा था। तब उन्होंने उसे खोल लिया।

5 जो लोग वहाँ थे उनमें से कुछ ने यीशु के चेलों से पूछा, “तुम इस गधे को क्यों खोल रहे हो?”

6 जो बातें कहने के निर्देश यीशु ने उन्हें दिए थे उन्होंने उनसे वे बातें कह दीं। इसलिए उन लोगों ने उन्हें गधे को ले जाने की अनुमति दे दी।

7 वे दोनों चेले उस गधे को यीशु के पास ले गए और उस पर अपने कपड़े डाल दिए {ताकि कुछ ऐसा बन जाए जिस पर वह बैठ सके}। उसके बाद यीशु उस गधे पर बैठ गया।

8 कई लोगों ने उसके सामने सड़क पर अपने कपड़े फैला दिए। बाकियों ने पास के खेतों से खजूर के पेड़ों की डालियाँ काट-काटकर सड़क पर फैला दीं।

9 जो लोग उसके आगे-आगे जा रहे थे और उसके पीछे-पीछे आ रहे थे वे सब चिल्ला रहे थे, “परमेश्वर की स्तुति करो!” {और} “परमेश्वर इस जन को आशीष दे जो उसके प्रतिनिधि के रूप में आया है।”

10 {वे यह भी चिल्ला रहे थे,} परमेश्वर तुझे आशीष दे जब तू उस रीति से शासन करता है जैसे हमारे पूर्वज राजा दाऊद ने शासन किया था!” “जो सबसे ऊँचे स्वर्ग में है उस परमेश्वर की स्तुति करो!”

11 यीशु ने उनके साथ यरूशलेम में प्रवेश किया, और उसके बाद वह मंदिर के आंगन में गया। वहाँ की सब वस्तुओं पर चारों ओर दृष्टि करने के बाद, वह नगर से चला गया क्योंकि दोपहर पहले से ही बीत गई थी। वह अपने 12 चेलों के साथ बैतनिय्याह के गाँव लौट गया।

12 अगले दिन, जब यीशु और उसके चेले बैतनिय्याह से निकल रहे थे, तो उसे भूख लगी।

13 थोड़ी दूरी पर, उसने पत्तों के साथ एक अंजीर के पेड़ को देखा, अतः वह उसके पास यह देखने के लिए गया शायद उसे उस पर अंजीर मिल जाएँ। परन्तु जब वह उसके निकट आया, तो उस पर पत्तों के अलावा कोई फल न पाया। ऐसा इसलिए था क्योंकि यह वर्ष का वह सामान्य समय नहीं था जब अंजीर के पेड़ पके हुए अंजीर उत्पन्न करें।

14 उसने उस पेड़ से कहा, “अब से कोई भी तेरा फल कभी खाने न पाएगा।” और उसके चेलों ने यह सुना।

15 यीशु और उसके चेले वापस यरूशलेम चले गए और मंदिर के आंगन में प्रवेश किया। उसने वहाँ ऐसे लोगों को देखा जो बलिदान के लिए पशुओं को खरीद रहे थे और बेच रहे थे। उसने मंदिर के आंगन में से उन लोगों को खदेड़ दिया। उसने उन लोगों की मेजें भी उलट दीं, जो रोमी सिक्कों के बदले में मंदिर के कर वाले पैसे बेच रहे थे। और उसने उन लोगों की चौकियों को उलट दिया जो खरीदने वालों को बलिदान के लिए कबूतर बेच रहे थे।

16 उसने ऐसे किसी भी व्यक्ति को मंदिर के क्षेत्र से होकर जाने की अनुमति नहीं दी जो बेचने के लिए कुछ भी ले जा रहा था।

17 फिर जब वह उन लोगों को शिक्षा दे रहा था, तब उसने उनसे कहा, "भविष्यद्वक्ताओं में से एक ने पवित्रशास्त्र में लिखा है कि परमेश्वर ने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे घर को ऐसा घर कहें जहाँ सब जातियों के लोग प्रार्थना कर सकें,' परन्तु तुम डाकुओं ने उसे एक ऐसी गुफा बना दिया है जिसमें डाकू छिपे रहते हैं।"

18 यीशु ने जो काम किया था उसके विषय में बाद में प्रधान याजकों और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों ने सुना। वे योजना बना रहे थे कि वे उसे कैसे मार डालें, परन्तु वे उससे डरते थे क्योंकि वे जान गए थे कि जो बातें वह सिखा रहा था उससे सम्पूर्ण भीड़ चकित हो गई थी।

19 उसी शाम, यीशु और उसके चेले नगर से चले गए {और फिर से बैतनिय्याह में सोए}।

20 अगली सुबह जब वे सड़क पर यरूशलेम की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि जिस अंजीर के पेड़ को यीशु ने श्राप दिया था वह सूख गया था और पूरी तरह से मुर्झा गया था।

21 पतरस को वह बात स्मरण आई जो यीशु ने उस अंजीर के पेड़ से कही थी, और उसने यीशु से कहा, "हे गुरु, देख! यह अंजीर का पेड़ जिसे तूने श्राप दिया था सूख गया है!"

22 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "तुम्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि जो मैंने मांगा था परमेश्वर ने वही किया! तुम्हें भरोसा करना चाहिए कि जो कुछ तुम परमेश्वर से करने के लिए कहोगे वह उसे करेगा!

23 साथ ही यह भी ध्यान रखो: यदि कोई व्यक्ति पहाड़ से कहे कि 'उठ जा और स्वयं को समुद्र में डाल दे,' और यदि वह संदेह न करे कि जो उसने मांगा है वह घटित होगा, अर्थात, यदि वह विश्वास करे कि ऐसा घटित होगा, तो परमेश्वर उसके लिए वैसा करेगा।

24 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि जब कभी तुम परमेश्वर से प्रार्थना करके कुछ मांगो, तो विश्वास कर लो कि तुम उसे प्राप्त करोगे, और, यदि तुम उस पर भरोसा करो, तो परमेश्वर उसे तुम्हारे लिए कर देगा।

25 अब, मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि जब कभी तुम प्रार्थना करते हो, तो यदि किसी मनुष्य के लिए तुम्हारे मन में इसलिए द्वेष हो क्योंकि उन्होंने तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है, तो तुम पर आने वाला उनका कर्ज क्षमा कर दो ताकि स्वर्ग में रहने वाला तुम्हारा पिता भी तुम्हारे पापों के लिए उस पर आने वाला तुम्हारा कर्ज क्षमा कर दे।"

26 [परन्तु यदि तुम उनका कर्ज क्षमा न करो, तो तुम्हारा पिता भी, जो स्वर्ग में है, तुम्हारे पापों के लिए तुम्हारा कर्ज क्षमा नहीं करेगा।]

27 यीशु और उसके चेले फिर से यरूशलेम के मंदिर के आंगन में पहुँचे। जिस समय यीशु वहाँ टहल रहा था, तो प्रधान याजकों, यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों, और पुरनियों का एक दल मिलकर उसके पास आया।

28 उन्होंने उससे कहा, "तू इन कामों को किस अधिकार से करता है? जिन कामों को तूने यहाँ कल किया था उन्हें करने के लिए तुझे किसने अधिकार दिया?"

29 यीशु ने उनसे कहा, "मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछूँगा। यदि तुम मुझे उत्तर दोगे, तो मैं भी तुम्हें बता दूँगा कि इन कामों को करने का अधिकार मुझे किसने दिया है।

30 क्या वह परमेश्वर ही था जिसने यूहन्ना को उसके पास आने वाले लोगों को बपतिस्मा देने का अधिकार दिया था? या वे लोग ही थे जिन्होंने उसे यह अधिकार दिया था?"

31 वे आपस में वाद-विवाद करने लगे कि वे क्या उत्तर दें। उन्होंने आपस में कहा, "यदि हम कहते हैं कि वह परमेश्वर ही था जिसने उसे अधिकार दिया था, तो वह हमसे कहेगा, 'फिर तो जो यूहन्ना ने कहा था तुम्हें उस पर विश्वास करना चाहिए था!'

32 दूसरी ओर, यदि हम कहें कि यह लोग ही थे जिन्होंने यूहन्ना को अधिकार दिया था, तब हमारे साथ क्या घटित होगा?" वे यह कहने से डरते थे कि यूहन्ना को अधिकार कहाँ से मिला था, क्योंकि वे जानते थे कि लोग उन पर बहुत क्रोधित होंगे। वे जानते थे कि सब लोग वास्तव में विश्वास करते थे कि यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था जिसे परमेश्वर ने भेजा था।

33 इसलिए उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते कि यूहन्ना को लोगों को बपतिस्मा देने का अधिकार किसने दिया।" तब यीशु ने उसने कहा, "क्योंकि तुमने मेरे प्रश्न का

उत्तर नहीं दिया, इसलिए मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि कल यहाँ उन कामों को करने का अधिकार मुझे किसने दिया था।"

Mark 12:1

1 फिर यीशु ने यहूदी अगुवों को एक कहानी बताई जिसमें एक सबक था। उसने कहा, "किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई। उसने उसकी सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर बाड़ भी लगाई। उसने अंगूरों को कुचलने पर उनसे निकलने वाले रस को इकट्ठा करने के लिए एक पत्थर का हौद बनाया। उसने अपनी दाख की बारी की रखवाली करने के लिए किसी व्यक्ति के बैठने के लिए एक मीनार भी बनाई। उसने उस दाख की बारी को कुछ लोगों को किराए पर दे दिया कि वे उसकी देखरेख करें और वह दूसरे देश की यात्रा पर चला गया।

2 जब अंगूरों की कटनी का समय आया, तो दाख की बारी के स्वामी ने अपनी दाख की बारी की रखवाली करने वालों के पास एक दास को इसलिए भेजा, क्योंकि वह दाख की बारी की उपज का अपना भाग उनसे लेना चाहता था।

3 परन्तु जब वह दास पहुँचा, तो उन्होंने उस दास को पकड़कर पीटा, और उन्होंने उसे फल में से कुछ नहीं दिया। उसके बाद उन्होंने उसे भगा दिया।

4 बाद में स्वामी ने उनके पास अपने दासों में से किसी दूसरे को भेजा। परन्तु उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसे अपमानित किया।

5 बाद में स्वामी ने एक और दास को भेजा। जो लोग दाख की बारी की देखरेख कर रहे थे उन्होंने उस व्यक्ति की हत्या कर दी। उन्होंने और भी बहुत से दासों के साथ बुरा बर्ताव किया जिनको उसने भेजा था। कुछ को उन्होंने पीटा और कुछ की उन्होंने हत्या कर दी।

6 उस स्वामी के पास अभी भी एक और व्यक्ति था, जो उसका पुत्र था, जिससे वह अत्यंत प्रेम करता था। इसलिए, अंत में उसने अपने पुत्र को उनके पास भेजा, क्योंकि उसने सोचा था कि वे उसके पुत्र को पहचान लेंगे और उसके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे।

7 परन्तु जब दाख की बारी की देखरेख करने वाले लोगों ने उसके पुत्र को आते देखा, तो वे एक दूसरे से बोले, 'देखो! यही स्वामी का पुत्र है, जो किसी दिन इस दाख की बारी का वारिस होगा! इसलिए आओ हम इसे मार डालें ताकि यह दाख की बारी हमारी हो जाए!'

8 उन्होंने स्वामी के पुत्र को पकड़ लिया और उसकी हत्या कर दी। उसके बाद उन्होंने उसके शव को दाख की बारी के बाहर फेंक दिया।

9 इसलिए मैं तुम्हें बताऊँगा कि दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा। वह आकर उन दुष्ट लोगों को जो उसकी दाख की बारी की देखरेख कर रहे थे मार डालेगा। तब वह उस दाख की बारी की देखरेख के लिए दूसरे लोगों की व्यवस्था करेगा।

10 क्या तुम नहीं जानते कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है? जो लोग भवन बना रहे थे उन्होंने एक पत्थर का उपयोग करने से इन्कार कर दिया। परन्तु प्रभु ने उसी पत्थर को उसके उचित स्थान पर रखा और वह भवन का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया!

11 यह काम प्रभु ने किया है, और हम इसे देखकर अचम्भा करते हैं।"

12 तब यहूदी अगुवों ने जान लिया कि जब उसने उन दुष्ट लोगों द्वारा किए गए कामों के विषय में यह कहानी बताई तो वह उन्हीं पर दोष लगा रहा था। इसलिए यहूदी अगुवों ने उसे बंदी बनाना चाहा, परन्तु वे इस बात से डरते थे कि यदि यहूदी अगुवों ने ऐसा किया तो लोगों की भीड़ क्या करेगी। इसलिए वे उसे छोड़कर चले गए।

13 यहूदी अगुवों ने यीशु के पास कुछ फरीसियों को भेजा {जो सोचते थे कि यहूदियों को केवल वही कर देना चाहिए जो उनके अपने यहूदी अधिकारी चाहते थे कि लोग चुकाएँ}। उन्होंने हेरोदेस अंतिपास और रोमी सरकार का समर्थन करने वाले दल के कुछ सदस्यों को भी भेजा। वे यीशु को फँसाना चाहते थे; वे यीशु से कुछ ऐसा कहलवाना चाहते थे जिससे उनमें से कोई समूह उससे क्रोधित हो जाए ताकि वे उसके विरुद्ध आरोप लगा सकें।

14 उनके पहुँचने पर, उनमें से एक ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू केवल वही सिखाता है जो सत्य है। हम यह भी जानते हैं कि तू लोगों के विचारों से प्रभावित नहीं होता। बजाए इसके, तू सच्चाई से लोगों को सिखाता है कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है कि वे करें; तू उनकी सामाजिक उपाधि के लिए सम्मान प्रकट नहीं करता। {इसलिए हमें बता कि तू

इस मामले के विषय में क्या सोचता है:} क्या यह सही है कि हम रोमी सरकार को कर दें, या न दें? क्या हमें कर देना चाहिए, या हमें उन्हें कर नहीं देना चाहिए?"

15 यीशु जानता था कि वे वास्तव में यह जानना नहीं चाहते कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है कि वे करें। इसलिए उसने उनसे कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे कोई ऐसी बात कहलवाना चाहते हो जिसके लिए तुम मुझ पर दोष लगा सको, {परन्तु मैं वैसे भी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा।} मेरे पास एक सिक्का लेकर आओ ताकि मैं उसे देखूँ।"

16 जब वे उसके पास एक सिक्का लेकर आए, तो उसने उनसे पूछा, "इस सिक्के पर किसका चित्र है? और इस पर किसका नाम है?" उन्होंने प्रतिउत्तर दिया, "यह कैसर का चित्र और नाम है{, अर्थात वह व्यक्ति जो रोमी सरकार पर शासन करता है}।"

17 यीशु ने उनसे कहा, "{इस मामले में} जो सरकार का है वह सरकार को दो और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।" जो उसने कहा उससे वे चकित हो गए।

18 सदूकियों के समूह के लोग इस बात से इन्कार करने लगे कि मरने के बाद लोग फिर से जीवित हो जाते हैं। {लोगों के फिर से जीवित होने के विचार का उपहास करके यीशु को बदनाम करने के लिए, उनमें से कुछ लोगों ने} उसके पास आकर उससे पूछा,

19 "हे गुरु, मूसा ने हमें निर्देश दिया है कि यदि कोई पुरुष बिना संतान उत्पन्न किए मर जाए, तो उस मरे हुए व्यक्ति की विधवा से उसका भाई विवाह कर ले। तब यदि वे दोनों संतान उत्पन्न करें, तो सब लोग यही समझेंगे कि वे उस मरे हुए व्यक्ति की संतान हैं, और इस रीति से मरे हुए व्यक्ति का वंश बना रहेगा।

20 इसलिए यहाँ एक उदाहरण है: एक परिवार में सात भाई थे। सबसे बड़े भाई ने एक स्त्री से विवाह किया, परन्तु उसने और उसकी पत्नी ने कोई संतान उत्पन्न नहीं की। तब बाद में वह मर गया।

21 दूसरे भाई ने {इस व्यवस्था का अनुसरण करते हुए} उस स्त्री से विवाह कर लिया और उसने भी कोई संतान उत्पन्न नहीं की। तब बाद में वह मर गया। तीसरे भाई ने भी वैसा ही किया जैसा दूसरे भाई ने किया था। परन्तु उसने भी कोई संतान उत्पन्न नहीं की, और बाद में मर गया।

22 अंत में उन सातों भाइयों ने एक-एक करके उस स्त्री से विवाह किया, परन्तु किसी के भी कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई, और एक-एक करके वे मर गए। बाद में वह स्त्री भी मर गई।

23 {इसलिए, जो कुछ लोग कहते हैं यदि वह सच होता, कि लोग मरने के बाद फिर से जीवित हो जाएँगे,} तो तू क्या सोचता है कि जब लोग फिर से जीवित हो जाएँगे तो वह स्त्री किसकी पत्नी ठहरेगी? ध्यान रहे कि वह स्त्री उन सातों भाइयों से विवाह कर चुकी थी!"

24 यीशु ने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, "तुम लोग निश्चित रूप से गलत हो। तुम नहीं जानते कि पवित्रशास्त्र इस विषय में क्या शिक्षा देता है। तुम लोगों को फिर से जीवित करने की परमेश्वर की सामर्थ्य को भी नहीं समझते।

25 {वह स्त्री उन भाइयों में से किसी की भी पत्नी इसलिए नहीं ठहरेगी,} क्योंकि जब लोग फिर से जीवित हो जाएँगे, तो पुरुषों के पत्नियाँ रखने और स्त्रियों के पति रखने के बजाए, वे स्वर्ग के दूतों के समान हो जाएँगे। {और स्वर्गदूत विवाह नहीं करते।}

26 परन्तु मुझे लोगों के मरने के बाद फिर से जीवित होने के विषय में बोलने दो। जो पुस्तक मूसा ने लिखी, उस पुस्तक में उसने उन लोगों के विषय में कुछ कहा है जो मर गए हैं, जिसका मुझे निश्चय है कि तुमने वह पढ़ा होगा। जिस समय मूसा जलती हुई झाड़ी को देख रहा था, तब परमेश्वर ने उससे कहा, 'अब्राहम जिस परमेश्वर की आराधना करता है और इसहाक जिस परमेश्वर की आराधना करता है और याकूब जिस परमेश्वर की आराधना करता है वह मैं ही हूँ।' {परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि यदि उसने उन मनुष्यों को फिर से जीवित न किया होता तो वह अब तक उनका परमेश्वर न होता।}

27 अब परमेश्वर की आराधना मरे हुए लोग नहीं करते। वे जीवित लोग ही होते हैं जो उसकी आराधना करते हैं। इसलिए जब तुम कहते हो कि मरे हुए लोग फिर से जीवित नहीं होते, तो तुम अत्यंत गलत हो।"

28 यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले एक मनुष्य ने उसकी बातों को सुना। वह जानता था कि यीशु ने सदूकियों के प्रश्न का उत्तर बहुत अच्छी रीति से दिया था। इसलिए उसने आगे आकर यीशु से पूछा, "सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा कौन सी है?"

29 यीशु ने उत्तर दिया, "सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा यह है: 'हे इस्राएल के लोगों, सुनो! प्रभु हमारा परमेश्वर, केवल वही हमारा परमेश्वर है।

30 तुम्हें प्रभु अपने परमेश्वर से उन सब बातों में जो तुम चाहते हो और महसूस करते हो, उन सब बातों में जो तुम सोचते हो, और उन सब बातों में जो तुम करते हो, प्रेम करना चाहिए!'

31 अगली सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा यह है: 'तुम्हें अपने आसपास के लोगों से उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना तुम स्वयं से करते हो।' इन दो से बढ़कर कोई भी आज्ञा महत्वपूर्ण नहीं है!"

32 उस मनुष्य ने यीशु से कहा, "हे गुरु, तूने अच्छे से उत्तर दिया है। तू सच कहता है कि परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है, और यह कि कोई और परमेश्वर नहीं है।

33 तूने यह भी ठीक-ठीक कहा है कि उन सब बातों में जो हम चाहते हैं और महसूस करते हैं, उन सब बातों में जो हम सोचते हैं, और उन सब बातों में जो हम करते हैं, हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। और तूने ठीक-ठीक कहा है कि हमें उन लोगों से जिनके सम्पर्क में हम आते हैं उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना हम स्वयं से करते हैं। और तूने यह भी ठीक-ठीक कहा है कि भोजन या पशुओं को होमबलि करने या अन्य बलियाँ चढ़ाने की तुलना में इन कामों को करना परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करता है।"

34 यीशु ने जान लिया कि इस मनुष्य ने बुद्धिमानी से उत्तर दिया है। इसलिए उसने उससे कहा, "{मुझे लगता है कि} तू परमेश्वर को अपने ऊपर शासन करने देने का निर्णय लेने के निकट ही है।" इसके बाद, यीशु को फँसाने के प्रयास में उससे इस प्रकार के और प्रश्न पूछने से यहूदी अगुवे डरे।

35 बाद में, जिस समय यीशु मंदिर के क्षेत्र में शिक्षा दे रहा था, तब उसने लोगों से कहा, "ऐसा क्यों है कि यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्य कहते हैं—और वे ठीक ही कहते हैं—कि मसीह राजा दाऊद का वंशज है?

36 पवित्र आत्मा ने दाऊद को मसीह के विषय में यह कहने के लिए प्रेरित किया था, 'परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरी दाईं ओर उस स्थान में बैठ, जहाँ मैं तुझे सब लोगों से अधिक आदर प्रदान करूँगा! उस समय तक यहीं बैठा रह जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को पूर्ण रीति से पराजित न कर दूँ!"'

37 इस कारण, क्योंकि दाऊद स्वयं ही मसीह को 'मेरे प्रभु' कहता है, तो मसीह राजा दाऊद के वंश का पुरुष कैसे हो सकता है? उसे तो दाऊद से बहुत बढ़कर होना चाहिए!" जब वह इन बातों को सिखाता था तो बहुत से लोग उसकी बातों को प्रसन्नतापूर्वक सुनते थे।

38 जिस समय यीशु लोगों को शिक्षा दे रहा था, तो उसने उनसे कहा, "चौकस रहो कि तुम उन यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों के समान व्यवहार न करो। उन्हें अच्छा लगता है कि लोग उनका सम्मान करें, इसलिए वे लोगों को यह दिखाने के लिए कि वे कितने महत्वपूर्ण हैं, लम्बे वस्त्र धारण करते हैं और इधर-उधर टहलते हैं। उन्हें यह भी अच्छा लगता है कि लोग बाजारों में उन्हें आदरपूर्वक नमस्कार करें।

39 उन्हें यहूदी सभास्थल में सबसे महत्वपूर्ण आसनों में बैठना अच्छा लगता है। उत्सवों में उन्हें ऐसे आसनों में बैठना अच्छा लगता है जहाँ सबसे आदरणीय लोग बैठते हैं।

40 वे विधवाओं की सारी सम्पत्ति {भी} चुरा लेते हैं। परन्तु दूसरे लोगों से ऐसा विचार करवाने के लिए कि वे धर्मी हैं, वे {लोगों के बीच में} लम्बे समय तक प्रार्थना करते रहते हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से उन्हें कठोर दंड देगा!"

41 बाद में, यीशु मंदिर में उन पेटियों के सामने बैठ गया, जिसमें लोग परमेश्वर के लिए दान डाला करते थे। जब वह वहाँ बैठा हुआ था, तो उसने बहुत से लोगों को उनमें से एक पेटी में पैसे डालते देखा, और उसने ध्यान दिया कि समृद्ध लोगों ने बड़ी मात्रा में पैसे डाले हैं।

42 फिर एक गरीब विधवा ने आकर उसमें ताम्बे के दो छोटे सिक्के डाले, जो मिलकर एक रोमी अधेले के बराबर मूल्य के होते हैं।

43 यीशु ने अपने चेलों को अपने चारों ओर इकट्ठा करके उनसे कहा, "सच तो यह है कि उन दूसरे लोगों के पास बहुत धन है, परन्तु उन्होंने केवल उसका छोटा सा भाग ही दिया है। परन्तु इस स्त्री ने, जो बहुत गरीब है, वह सारा धन डाल दिया है जिससे उसे अपनी आज की आवश्यकताओं के सामान के लिए भुगतान करना था। इसलिए इस गरीब विधवा ने पेटी में बाकी सबसे अधिक पैसे डाले हैं!"

Mark 13:1

Mark 13:1

1 जब यीशु मंदिर में से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से
एक ने उससे कहा, "हे गुरु, देख कि दीवारों में पत्थर के ये
बड़े-बड़े कटे हुए खंड कितने अद्भुत हैं, और ये भवन कितने
आश्चर्यजनक हैं!"

2 यीशु ने उनसे कहा, "हाँ, ये भवन जिनको तुम देख रहे हो
आश्चर्यजनक हैं{, परन्तु मैं तुम्हें उनके विषय में कुछ बताना
चाहता हूँ}। {विदेशी आक्रमणकारी} इनको पूर्ण रीति से नष्ट
कर देंगे, जिसके परणामस्वरूप इस मंदिर क्षेत्र में कोई भी
पत्थर दूसरे पत्थर के ऊपर नहीं छोड़ा जाएगा।"

3 जब वे मन्दिर से घाटी के पार होकर जैतून के पहाड़ पर
पहुँचे, तो यीशु बैठ गया। जिस समय पतरस, याकूब, यूहन्ना,
और अन्द्रियास उसके साथ अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा,

4 "हमें बता कि ये बातें कब घटित होंगी जिसकी योजना
परमेश्वर ने बनाई है? हम पर यह प्रकट करने के लिए कौन सी
बातें घटित होंगी कि ये बातें होने वाली हैं?"

5 यीशु ने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, "चौकस रहो कि जो कुछ घटित
होने वाला है उसके विषय में कोई तुम्हें धोखा न दे!

6 बहुत से लोग आएँगे, और हर एक जन यह दावा करेगा कि
वह मैं हूँ। हर एक जन अपने विषय में कहेगा, 'मैं मसीह हूँ!' वे
बहुत से लोगों को धोखा देंगे।

7 जब भी लोग तुम्हें उन युद्धों के विषय में बताएँ जो हो रहे हैं
और जो युद्ध हो सकते हैं, तो स्वयं को परेशान मत होने देना।
ये बातें अवश्य ही घटित होंगी। परन्तु जब ये घटित हों, तो यह
मत सोचना कि यह संसार का अंत है!

8 विभिन्न देशों में रहने वाले समूह आपस में लड़ेंगे, और विभिन्न
सरकारें भी आपस में लड़ेंगी। विभिन्न स्थानों में भूकम्प आएँगे
और अकाल पड़ेंगे। तब पर भी जब ये बातें घटित होंगी, उस
समय लोगों ने कष्ट उठाना अभी आरम्भ ही किया होगा। ये
पहली बातें जिनको वे सहते हैं, वे उस पहली पीड़ा के समान
होंगी जो एक स्त्री को तब होती है जब वह एक बच्चे को जन्म
देने वाली होती है। इसके बाद वे और भी अधिक पीड़ित होंगे।

9 उस समय लोग तुम्हारे साथ जो करेंगे उसके लिए तैयार
रहो। क्योंकि तुम मुझ पर विश्वास करते हो, इसलिए वे तुम्हें
बंदी बनाकर धार्मिक महासभाओं के सामने तुम पर मुकद्दमा
चलाएँगे। अन्य लोग तुम्हें यहूदी सभास्थल में पीटेंगे। उच्च
सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति में लोग तुम पर मुकद्दमा
चलाएँगे। जिसके परिणामस्वरूप, तुम उन्हें मेरे विषय में
बताने पाओगे।

10 इससे पहले कि परमेश्वर ने जो योजना बनाई है वह उसे पूरा
करे, मेरे अनुयायियों को सब जातियों के लोगों को सुसमाचार
सुनाना है।

11 जब लोग तुम पर मुकद्दमा चलाने के लिए तुम्हें बंदी बनाएँ,
तो यह चिंता मत करना कि तुम क्या बोलोगे। बजाए इसके,
जो परमेश्वर उस समय तुम्हारे मन में डालता है वही बोलना।
उस समय बोलने वाले केवल तुम नहीं होगे। वह पवित्र आत्मा
ही होगा जो तुम्हारे द्वारा बातें करेगा।

12 {दूसरी बुरी बातें जो घटित होंगी:} जो लोग मुझ पर विश्वास
नहीं करते, वे अपने भाई-बहनों को बंदी बनाने में दूसरे लोगों
की सहायता करेंगे, ताकि सरकार उन्हें मृत्युदंड दे। कुछ
माता-पिता अपने बच्चों को धोखा देंगे और कुछ बच्चे अपने
माता-पिता को धोखा देंगे ताकि सरकारी अधिकारी उनके
माता-पिता की हत्या कर दें।

13 बहुत से लोग तुम से इसलिए बैर रखेंगे क्योंकि तुम मुझ पर
विश्वास करते हो। परन्तु परमेश्वर तुम सब को जो मुझ पर
दृढ़ता से भरोसा रखते हैं बचाएगा {जब तक कि तुम्हारे जीवन
का अंत न हो}।

14 उस समय के दौरान वह घृणित वस्तु मंदिर में प्रवेश कर
जाएगी। वह मंदिर को अशुद्ध कर देगी और उसे त्याग देने के
लिए लोगों को प्रेरित करेगी। जब तुम उसे वहाँ देखो जहाँ उसे
नहीं होना चाहिए, तो शीघ्रता से भाग जाना! (जो भी व्यक्ति
इस पढ़े वह इस चेतावनी पर ध्यान दे!) उस समय जो लोग
यहूदिया जिले में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ।

15 जो लोग अपने घरों से बाहर हों, वे कुछ लेने के लिए अपने
घरों में प्रवेश न करें।

16 जो खेत में काम कर रहे हों, वे अतिरिक्त कपड़े लेने के लिए
अपने घरों को न लौटें।

17 जब ऐसा घटित होता है, तो गर्भवती स्त्रियों और जो अपने बच्चों को दूध पिलाती होंगी इनके लिए यह क्या ही भयानक बात होगी।

18 उन दिनों में लोग बहुत भारी दुःख उठाएँगे। जिस समय परमेश्वर ने सबसे पहले संसार की सृष्टि की थी, तब से लेकर अब तक लोगों ने कभी इस प्रकार का दुःख नहीं उठाया, और न ही फिर कभी लोग इस प्रकार से दुःख उठाएँगे। इसलिए प्रार्थना करो कि यह पीड़ादायक समय सर्दियों में घटित न हो{, जब यात्रा करना कठिन होगा}।

20 यदि परमेश्वर ने यह निश्चय न किया होता कि उस समय को घटा दे जब लोग बहुत दुःख उठाते हैं, तो सब लोग मर जाते। परन्तु उसने उस समय तो घटाने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि उसे उन लोगों की चिंता है जिनको उसने चुना है।

21 उस समय लोग झूठ बोलकर कहेंगे कि वे मसीह हैं। और कुछ परमेश्वर की ओर से भविष्यद्वक्ता होने का दावा करते हुए दिखाई देंगे। उस समय वे अनेकों प्रकार के चमत्कार दिखाएँगे। वे उन लोगों को भी धोखा देने का प्रयास करेंगे जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। इसलिए उस समय यदि कोई तुमसे कहे कि 'देखो, मसीह यहाँ है!', या फिर कोई कहे कि 'देखो, वह वहाँ पर है!', तो इस पर विश्वास न करना!

23 सचेत रहो! यह स्मरण रखो कि मैंने इन सब बातों के होने से पहले ही तुम्हें चेतावनी दे दी है!

24 उस समय के बाद जब लोग इस प्रकार से दुःख उठाएँगे, तब परमेश्वर सूर्य को अंधियारा कर देगा और चंद्रमा का प्रकाश न रहेगा;

25 परमेश्वर आकाश के तारों को गिरा देगा, और आकाश की सब वस्तुएँ अपने स्थान से हिलाई जाएँगी।

26 तब लोग मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को, सामर्थी रूप से और प्रतापी रूप से बादलों पर आते हुए देखेंगे।

27 तब मैं अपने स्वर्गदूतों को भेजूँगा कि वे उन लोगों को पृथ्वी के दूर-दूर के स्थानों से इकट्ठा करें जिन्हें परमेश्वर ने चुना है।

28 अब मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात से कुछ सीखो कि अंजीर का पेड़ कैसे बढ़ता है। जब उसकी डालियाँ कोमल हो जाती हैं और पत्ते निकलने लगते हैं तब तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट ही है।

29 उसी प्रकार से, जब तुम उन बातों को घटित होते देखो जिनका मैंने अभी वर्णन किया है, तब तुम जान लोगे कि मेरे लौटने का समय बहुत निकट है। यह ऐसा होगा कि मानो मैं द्वार पर ही हूँ।

30 इस बात को ध्यान में रखो: जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें तब तक यह पीढ़ी न मरेगी।

31 {तुम निश्चित हो सकते हो कि ये बातें घटित होंगी जिनकी मैंने भविष्यद्वाणी की है।} पृथ्वी और जो कुछ आकाश में हैं वे एक दिन नाश हो जाएँगे, परन्तु ये बातें जो मैंने तुमसे कही हैं निश्चित रूप से घटित होंगी।

32 परन्तु उस ठीक-ठीक समय को कोई नहीं जानता जब मैं वापस लौटूँगा। स्वर्ग के दूत भी नहीं जानते। यहाँ तक कि मैं, अर्थात परमेश्वर का पुत्र भी नहीं जानता। केवल मेरा पिता जानता है।

33 इसलिए तैयार रहो! हमेशा सचेत रहो और प्रार्थना करते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं कब वापस लौटूँगा!

34 यह इस बात के समान ही होगा। दूर देश जाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति जब अपने घर से निकलने पर होता है, तो वह अपने दासों से कहता है कि घर का प्रबंध उन्हें करना है। वह हर एक दास को बताता है कि उसे क्या करना है। फिर वह द्वारपाल से कहता है कि वह उसकी वापसी के लिए तैयार रहे।

35 उस मनुष्य को हमेशा तैयार रहना है, क्योंकि वह नहीं जानता कि उसका स्वामी शाम को, आधी रात को, भोर में जब मुर्गा बांग दे, या सुबह में आकाश में सूर्य का प्रकाश दिखाई देने के बाद लौटेगा। उसी प्रकार से, तुम को भी हमेशा तैयार रहना है, क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं कब लौटूँगा।

36 कहीं ऐसा न हो कि जब मैं अचानक से लौटूँ, तो पाऊँ कि तुम तैयार नहीं हो!

37 ये बातें जो मैं तुम चेलों से कह रहा हूँ वह मैं सबसे कह रहा हूँ: हमेशा तैयार रहो!"

Mark 14:1

1 यह केवल उससे दो दिन पहले का समय था जब लोग सप्ताहभर चलने वाले उस पर्व को मनाना आरम्भ करेंगे जिसे वे फसह का पर्व कहते थे। उन्हीं दिनों में वे एक पर्व और मनाते थे जिसे वे अख़मीरी रोटी का पर्व कहते थे। प्रधान याजक और यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्य योजना बना रहे थे कि वे यीशु को धोखे से कैसे बंदी बनाएँ। वे रोमी अधिकारियों के सामने उस पर दोष लगाना चाहते थे ताकि वे उसे मृत्युदंड दें।

2 वे आपस में कह रहे थे, "हमें पर्व के समय में ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यदि हम ऐसा करेंगे तो लोग हम पर क्रोधित हो जाएँगे और वे दंगा मचा देंगे!"

3 यीशु बैतनिय्याह गाँव में शमौन के घर में अतिथि था जिसे पहले कोढ़ था। जिस समय वे भोजन कर रहे थे तब एक स्त्री यीशु के पास आई। वह एक पत्थर का बर्तन लिए हुए थी जिसमें मूल्यवान, सुगंधित इत्र भरा हुआ था, जो मूल्यवान, सुगंधित जटामांसी से बना था। उसने उस बर्तन को खोलकर सारा सुगंधित इत्र यीशु के सिर पर उंडेल दिया।

4 वहाँ पर उपस्थित कुछ लोगों ने क्रोधित होकर मन ही मन कहा, "यह तो भयानक बात है कि इस स्त्री ने उस सुगंधित इत्र को बर्बाद कर दिया!

5 उसे तो एक वर्ष की मजदूरी को दाम में बेचा जा सकता था और फिर वह पैसा गरीब लोगों को दिया जा सकता था!" उन्होंने उसे झिड़का।

6 परन्तु यीशु ने कहा, "उसे डांटना बंद करो! उसने मेरे साथ वही किया है जो मैं उचित समझता हूँ। इसलिए तुम्हें उसे परेशान नहीं करना चाहिए!

7 तुम्हारे बीच में गरीब हमेशा रहेंगे। इसलिए तुम जब चाहो तब उनकी सहायता कर सकते हो। परन्तु मैं यहाँ तुम्हारे साथ अधिक समय तक नहीं रहूँगा।

8 {यह उचित है कि} जो वह कर सकती थी उसने वही किया। यह ऐसा है कि मानो वह जानती थी कि मैं शीघ्र ही मरने वाला हूँ और उसने मेरी देह को गाड़े जाने के लिए अभिषेक किया है।

9 मैं तुमसे यह कहूँगा: समूचे संसार में मेरे अनुयायी जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार करेंगे, वे यह भी बताएँगे जो उसने किया है, और लोग उसे स्मरण रखेंगे।"

10 फिर यहूदा इस्करियोती प्रधान याजकों के पास यीशु को पकड़ने में उनकी सहायता करने के लिए बातचीत करने गया। {उसने ऐसा किया भले ही} वह 12 चेलों में से एक था।

11 जब प्रधान याजकों ने सुना कि वह उनके लिए क्या करने को तैयार है, तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने वादा किया कि वे बदले में उसे पैसा देंगे। यहूदा सहमत हो गया, और यीशु को उन्हें सौंपने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

12 पर्व के पहले दिन जिसे वे अख़मीरी रोटी का पर्व कहते थे, जब वे फसह के लिए मेम्नों को बलि करते थे, तब यीशु के चेलों ने उससे कहा, "तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर फसह के पर्व के लिए भोजन तैयार करें ताकि हम उसे खाएँ?"

13 अतः यीशु ने सब कुछ तैयार करने के लिए अपने दो चेलों का चुनाव किया। उसने उनसे कहा, "यरूशलेम नगर में जाओ। तुम एक व्यक्ति से मिलोगे जो पानी से भरा एक घड़ा उठाए होगा। उसके पीछे-पीछे जाना।

14 जब वह एक घर में प्रवेश करे, तो उस घर के स्वामी से कहा, 'हमारा गुरु चाहता है कि हम फसह के पर्व का भोजन तैयार करें, ताकि वह हमारे अर्थात उसके चेलों के साथ उसे खाए। कृपया हमें वह कमरा दिखा दो।'

15 वह तुम्हें एक बड़ा कमरा दिखाएगा जो घर की ऊपरी मंजिल पर है। उसमें दरी, खाने के सोपान, और खाने की मेज होगी, और वह हमारे लिए तैयार होगा कि हम उसमें भोजन खाएँ। तब वहाँ हमारे लिए भोजन तैयार करना।"

16 अतः वे दोनों चेले चले गए। उन्होंने नगर में जाकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा उसने उनसे कहा था। फिर उन्होंने फसह के पर्व के लिए भोजन तैयार किया।

17 जब शाम हुई, तो यीशु 12 चेलों के साथ उस घर में पहुँचा।

18 जब वे सब मेज के पास बैठे हुए भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, “इस बात को ध्यान लगाकर सुनो: तुम में से एक मेरे शत्रुओं को मुझे पकड़ने में सक्षम करेगा। वह तुम में से ही एक है जो इस समय मेरे साथ भोजन कर रहा है!”

19 चेले बहुत उदास हो गए, और एक के बाद एक, हर एक ने यीशु से कहा, “निश्चय ही वह मैं नहीं हूँ जो तुझे पकड़वाएगा, सही है न?”

20 तब उसने उनसे कहा, “वह तुम 12 चेलों में से ही एक है, जो मेरे साथ थाली में रखी चाशनी में रोटी डुबो रहा है।

21 यह निश्चित है कि मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र, मर जाऊँ, क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं ने मेरे विषय में यही लिखा है। परन्तु उस मनुष्य के लिए भयानक दंड होगा जो मुझे पकड़ने में मेरे शत्रुओं की सहायता करेगा! बल्कि, उस मनुष्य के लिए अच्छा तो यह होता कि उसने कभी जन्म ही न लिया होता!”

22 जिस समय वे भोजन कर रहे थे, तब उसने एक चपटी रोटी लेकर उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर उसने उसे तोड़कर उन्हें दिया और उनसे कहा, “यह रोटी मेरी देह है। इसे लो और खा लो।”

23 उसके बाद, उसने दाखरस से भरा कटोरा लेकर उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर उसने उसे अपने चेलों को दिया और उन सबने उस कटोरे में से पिया।

24 यीशु ने अपने चेलों से कहा, “यह दाखरस मेरा लहू है, जो मेरी देह से बहने वाला है, जब मेरे शत्रु मुझे मार डालेंगे। इस लहू के द्वारा मैं उस वाचा को दृढ़ करूँगा, जो परमेश्वर ने बहुत से लोगों के पापों को क्षमा करने के लिए बांधी थी।

25 मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो: मैं अब उस समय तक दाखरस नहीं पीऊँगा, जब तक कि मैं उसे फिर से तब न पीऊँ, जब परमेश्वर राजा होकर सब जगह शासन करता है।”

26 उनके परमेश्वर की स्तुति में एक गीत गाने के बाद, यीशु और उसके चेले जैतून के पहाड़ की ओर चले गए।

27 जब वे अपने मार्ग ही में थे, तो यीशु ने अपने चेलों से कहा, “जकर्याह भविष्यद्वक्ता ने पवित्रशास्त्र में लिखा है जो परमेश्वर ने मेरे विषय में कहा है, ‘मैं चरवाहे की हत्या कर दूँगा और उसकी भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगीं।’ ये शब्द सच हो जाएँगे। तुम सब मुझे छोड़कर भाग जाओगे।

28 परन्तु जब परमेश्वर मुझे फिर से जीवित कर देगा, तो मैं तुमसे पहले गलील जिले को जाऊँगा और तुमसे वहीं मिलूँगा।”

29 पतरस ने यीशु से कहा, “सम्भवतः बाकी सब चेले तुझे छोड़ भी दें, परन्तु मैं नहीं छोड़ूँगा! मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा!”

30 तब यीशु ने पतरस से कहा, “सच तो यह है कि आज ही की रात, मुर्गे के दो बार बांग देने से पहले, तू स्वयं ही मेरे विषय में कहेगा कि तू मुझे नहीं जानता। ”

31 परन्तु पतरस ने दृढ़तापूर्वक प्रतिउत्तर दिया, “यहाँ तक कि यदि वे मेरी हत्या भी कर दें, मैं कभी नहीं कहूँगा कि मैं तुझे नहीं जानता।” और बाकी के सब चेलों ने भी यही बात बोली।

32 यीशु और उसके चेले उस स्थान पर गए जिसे लोग गतसमनी कहते थे। यीशु ने अपने कुछ चेलों से कहा, “जब तक मैं प्रार्थना करूँ, तब तक तुम यहीं ठहरो!”

33 उसने अपने साथ पतरस, याकूब, और यूहन्ना को लिया। यीशु अत्यंत भावनात्मक रूप से व्याकुल हो गया।

34 उसने उनसे कहा, “मैं बहुत उदास हूँ। यह ऐसा है कि मानो मैं मरने वाला हूँ। तुम लोग यहीं ठहरो और जागते रहो!”

35 यीशु ने थोड़ा आगे जाकर स्वयं को भूमि पर गिरा दिया। फिर उसने प्रार्थना की कि यदि सम्भव हो, तो उसे दुःख न उठाना पड़े।

36 उसने कहा, “हे मेरे पिता, क्योंकि तू सब कुछ करने में सक्षम है, इसलिए मुझे बचा, ताकि मुझे अब दुःख न उठाना पड़े! परन्तु जो मैं चाहता हूँ वह मत कर। बजाए इसके, जो तू चाहता है वही कर!”

37 फिर यीशु उस स्थान में लौट आया जहाँ उसने पतरस, याकूब, और यूहन्ना को छोड़ा था। उसने उन चेलों को सोता हुआ पाया। उसने उन्हें जगाया और पतरस से, जिसे शमौन भी कहते हैं, कहा, "हे शमौन! मैं निराश हूँ कि तुम सो गए, और यह कि तुम थोड़े समय के लिए भी न जाग पाए!"

38 {और यीशु ने उनसे कहा,} "जो मैं कहता हूँ तुम उसे करना तो चाहते हो, परन्तु तुम में पर्याप्त सामर्थ्य नहीं है। जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, ताकि जब तुम परीक्षा में पड़ो तो तुम विरोध कर सको!"

39 तब उसने जाकर फिर से वही प्रार्थना की जो उसने पहले की थी।

40 जब यीशु लौटकर आया, तो उसने पाया कि वे फिर से सो रहे हैं; वे नींद से इतने बोझिल थे कि वे अपनी आँखें भी खुली नहीं रख पा रहे थे। क्योंकि वे शर्मिन्दा थे, इसलिए जब उसने उनको जगाया तो वे नहीं जानते थे कि उससे क्या कहें।

41 तब यीशु ने जाकर एक बार फिर से प्रार्थना की। वह तीसरी बार लौटकर आया और उन्हें फिर से सोता हुआ पाया। उसने उनसे कहा, "मैं निराश हूँ कि तुम फिर से सो रहे हो! तुम पर्याप्त रूप से सो चुके हो। मेरे लिए दुःख उठाने का समय आरम्भ होने वाला है। देखो! कोई व्यक्ति मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को पकड़ने के लिए पापी मनुष्यों को सक्षम करने वाला है।

42 इसलिए उठो! आओ हम चलें! देखो! वह यहीं है जो मुझे पकड़ने के लिए उन्हें सक्षम कर रहा है!"

43 जिस समय यीशु यह बोल ही रहा था, यहूदा आ पहुँचा। भले ही वह 12 चेलों में से एक था, परन्तु वह यीशु को पकड़ने में उसके शत्रुओं को सक्षम करने आया था। उसके साथ लाठियाँ और तलवारें लिए हुए एक भीड़ भी थी। उन लोगों को यहूदी महासभा के अगुवों ने भेजा था।

44 यहूदा ने, जो यीशु के शत्रुओं की उसे पकड़ने में सहायता कर रहा था, उस भीड़ से पहले ही कह दिया था, "जिस व्यक्ति को मैं चूम लूँ, वह वही है जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो। जब मैं उसे चूम लूँ, तो उसे पकड़ लेना, और सावधानी से उसकी पहरेदारी करते हुए उसे ले जाना।"

Mark 14:1

45 अतः, जब यहूदा पहुँचा, तो उसने तुरन्त यीशु के पास आकर कहा, "हे मेरे गुरु!" फिर उसने यीशु को चूम लिया।

46 उसके बाद भीड़ ने यीशु को पकड़कर बंदी बना लिया।

47 परन्तु उसके एक चेले ने, जो पास ही खड़ा था, अपनी तलवार निकाल ली। उसने उससे महायाजक के दास पर वार किया, परन्तु वह केवल उस दास का कान ही काट पाया।

48 यीशु ने उनसे कहा, "यह आश्चर्य की बात है कि तुम यहाँ मुझे बंदी बनाने के लिए तलवारें और लाठियाँ लेकर आए हो, कि मानो मैं कोई डाकू हूँ।

49 मैं तो कई दिनों तक मंदिर के आंगन में लोगों को शिक्षा देते हुए तुम्हारे साथ ही था। उस समय तुमने मुझे बंदी बनाने का प्रयास क्यों नहीं किया? परन्तु यह इसलिए घटित हुआ है कि जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में मेरे विषय में लिखा है, वह घटित हो।"

50 तब यीशु के सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।

51 उस समय एक जवान पुरुष यीशु के पीछे-पीछे चल रहा था। उसने अपने शरीर पर केवल एक सनी का वस्त्र ही पहना हुआ था। उस भीड़ ने उस जवान पुरुष को पकड़ लिया,

52 परन्तु, जैसे ही उसने स्वयं को उनकी पकड़ से खींचा, उसका सनी का वस्त्र उनके हाथों में ही रह गया, और फिर वह नंगा ही भाग गया।

53 जिन मनुष्यों ने यीशु को पकड़ा था, वे उसे उस घर में ले गए, जहाँ महायाजक रहता था। यहूदी महासभा के सभी सदस्य वहाँ इकट्ठा थे।

54 पतरस एक दूरी बनाकर यीशु के पीछे-पीछे गया। वह उस घर के आंगन में गया जहाँ महायाजक रहता था, और वह वहाँ महायाजक के घर के पहरेदारों के साथ बैठ गया। वह आग के पास स्वयं को गर्म कर रहा था।

55 प्रधान याजकों और यहूदी महासभा के बाकी सदस्यों ने ऐसे लोगों को खोजने का प्रयास किया जो यीशु के विषय में झूठ

बोल सकें ताकि वे रोमी अधिकारियों को उसे मृत्युदंड देने के लिए सहमत कर सकें। वे इसमें सफल नहीं हो पाए।

56 बड़ी संख्या में लोगों ने यीशु के विषय में झूठ बोला, परन्तु जो बातें उन्होंने बोलीं वे आपस में मेल नहीं खाती थीं।

57 अंत में, कुछ लोग खड़े हुए और यह कहकर यीशु पर झूठा दोष लगाया,

58 "हमने उसे ऐसा कहते हुए सुना था, 'मैं मनुष्यों के द्वारा बनाए हुए इस मंदिर को ढा दूँगा, और फिर तीन दिन में किसी की सहायता के बिना मैं दूसरा मंदिर बना दूँगा।'"

59 परन्तु इन मनुष्यों ने जो कहा, वह उनमें से बाकी लोगों द्वारा कही गई बातों से मेल नहीं खाता था।

60 तब महायाजक आप ही उनके सामने खड़ा हुआ, और यीशु से कहा, "जो कुछ उन्होंने कहा, क्या तू उसका प्रतिउत्तर न देगा? जिन सब बातों को वे तुझ पर दोष लगाने के लिए कह रहे हैं, उनके विषय में तू क्या कहता है?"

61 परन्तु यीशु चुप ही रहा, और कोई प्रतिउत्तर नहीं दिया। तब महायाजक ने फिर से प्रयास किया। उसने उससे पूछा, "क्या तू ही मसीह है? क्या तू ऐसा कहता है कि तू ही परमेश्वर का पुत्र है?"

62 यीशु ने कहा, "मैं ही हूँ। इसके अलावा, तुम मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को, पूर्ण रूप से सामर्थी परमेश्वर के बगल में शासन करते हुए देखोगे। तुम मुझे आकाश के बादलों में से नीचे उतरते हुए भी देखोगे!"

63 यीशु की बातों की प्रतिक्रिया में, विरोध जताने के लिए महायाजक ने अपना बाहरी वस्त्र फाड़कर कहा, "हमें निश्चय ही अब इस मनुष्य के विरोध में साक्षी देने के लिए और गवाहों की आवश्यकता नहीं है!

64 तुमने उसके परमेश्वर होने के निन्दात्मक दावे को सुन लिया है!" वे सब के सब इस बात पर सहमत हो गए कि यीशु दोषी है और मृत्युदंड के योग्य है।

65 उसके बाद उनमें से कुछ लोग उस पर थूकने लगे। उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी, और फिर वे उसे मारने लगे, और उससे कहने लगे, "यदि तू भविष्यद्वक्ता है, तो हमें बता कि तुझे किसने मारा!" और जो लोग यीशु की पहरेदारी कर रहे थे उन्होंने उसे हाथों से मारा।

66 जिस समय पतरस महायाजक के घर के बाहर आंगन में था, तो महायाजक के लिए काम करने वाली लड़कियों में से एक उसके पास आई।

67 जब उसने पतरस को आग के पास स्वयं को गर्म करते हुए देखा, तो उसने उसे बड़े ध्यान से देखा। फिर उसने कहा, "तू भी तो नासरत नगर के रहने वाले उस पुरुष यीशु के साथ था!"

68 परन्तु पतरस ने यह कहकर इस बात से इन्कार कर दिया, "मैं नहीं जानता या मुझे समझ नहीं आ रहा कि तू किस बारे में बात कर रही है!" फिर वह वहाँ से हटकर आंगन के फाटक के पास चला गया।

69 वह दासी उसे वहाँ देखकर फिर से उन लोगों से बोली जो निकट ही खड़े थे, "यह मनुष्य उन्हीं में से एक है जो उस व्यक्ति के साथ थे जिसे उन लोगों ने बंदी बनाया है।"

70 परन्तु उसने फिर से इन्कार कर दिया। थोड़ी देर के बाद, जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने फिर से पतरस से कहा, "{जिस तरीके से तू बात कर रहा है उससे प्रकट होता है कि} तू भी गलील जिले का रहने वाला है। इसलिए यह पक्का है कि तू भी उन मनुष्यों में से एक है जो यीशु के संगी थे!"

71 परन्तु वह कहने लगा, "जिस मनुष्य के बारे में तुम बात कर रहे हो मैं उसे नहीं जानता! क्योंकि परमेश्वर जानता है कि मैं सच बोल रहा हूँ, और यदि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो वह मुझे दंड दे!"

72 ठीक उसी समय पर मुर्गे ने दूसरी बार बांग दी। तब पतरस को वह बात स्मरण आई जो यीशु ने उससे पहले ही कह दी थी, "मुर्गे के दूसरी बार बांग देने से पहले, तू तीन बार इस बात का इन्कार करेगा कि तू मुझे जानता है।" जब पतरस को मालूम हुआ कि वह यीशु का तीन बार इन्कार कर चुका है, तो वह अत्यंत उदास हो गया। पतरस रोने लगा।

Mark 15:1

1 सुबह में बड़ी भोर को प्रधान याजक और यहूदी महासभा के
सदस्य इस बात को निर्धारित करने के लिए एक साथ इकट्ठे
हुए कि रोमी राज्यपाल के सामने यीशु पर कैसे दोष लगाएँ।
उनके पहरेदारों ने यीशु के हाथ बांध दिए। वे उसे पिलातुस
राज्यपाल के निवास पर ले गए।

2 पिलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू ऐसा कहता है कि तू
यहूदियों का राजा है?" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू स्वयं ही
ऐसा कहता है।"

3 तब प्रधान याजकों ने दावा किया कि यीशु ने बहुत से बुरे
काम किए हैं।

4 इसलिए पिलातुस ने उससे फिर पूछा, "क्या तुझे कुछ नहीं
बोलना? सुन कि वे लोग तेरे द्वारा किए गए कितने सारे बुरे
कामों के विषय में बोल रहे हैं!"

5 परन्तु {भले ही यीशु दोषी नहीं था,} उसने और कुछ भी नहीं
कहा। जिसका परिणाम यह हुआ कि पिलातुस को बहुत
अचम्भा हुआ।

6 अब राज्यपाल की यह रीति थी कि वह प्रतिवर्ष फसह के पर्व
के समय में बंदीगृह में से एक व्यक्ति को स्वतंत्र करता था।
वह रीति के अनुसार उस बंदी को स्वतंत्र कर देता था जिसके
लिए लोग निवेदन करते थे।

7 उस समय पर वहाँ एक बरअब्बा नाम का व्यक्ति था {जिसे
सैनिकों ने} कुछ और मनुष्यों के साथ बंदीगृह में डाला हुआ
था। उन मनुष्यों ने रोमी सरकार के खिलाफ विद्रोह के दौरान
कुछ सैनिकों की हत्या कर दी थी।

8 एक भीड़ ने पिलातुस के पास जाकर उससे किसी व्यक्ति
को स्वतंत्र करने की विनती की, ठीक उसी प्रकार से जैसे
उसने पहले भी फसह के पर्व के दौरान उनके लिए इस रीति
के अनुसार किया था।

9 पिलातुस ने उन्हें प्रतिउत्तर दिया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए उस मनुष्य को स्वतंत्र कर दूँ जिसे तुम यहूदी लोग
अपना राजा कहते हो?"

10 उसने ऐसा इसलिए पूछा क्योंकि वह जान गया था कि प्रधान
याजक क्या करना चाह रहे थे। वे यीशु पर इसलिए दोष लगा
रहे थे क्योंकि वे उससे ईर्ष्या करते थे {क्योंकि बहुत सारे लोग
उसके चेले बन रहे थे}।

11 परन्तु प्रधान याजकों ने भीड़ से आग्रह किया कि वे
पिलातुस से निवेदन करें कि वह यीशु के बजाए बरअब्बा को
स्वतंत्र कर दे।

12 एक बार फिर से, पिलातुस ने उनसे कहा, "यदि मैं बरअब्बा
को स्वतंत्र करूँ, तो तुम क्या चाहते हो जो मैं इस मनुष्य के
साथ करूँ, जिसे तुम में से कुछ यहूदी अपना राजा कहते हैं?"

13 तब वे फिर से चिल्लाए, "अपने सैनिकों को उसे क्रूस पर
चढ़ाने की आज्ञा दे!"

14 तब पिलातुस ने उनसे कहा, "क्यों? उसने क्या अपराध
किया है?" परन्तु वे और भी ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगे, "अपने
सैनिकों को उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दे!"

15 क्योंकि पिलातुस भीड़ को प्रसन्न करना चाहता था, इसलिए
उसने उनके लिए बरअब्बा को स्वतंत्र कर दिया। उसके बाद,
उसके सैनिकों ने यीशु को चमड़े की पट्टियों से कोड़े मारे, जिन
पर उन्होंने धातु और हड्डी के टुकड़े बांधे हुए थे। पिलातुस ने
सैनिकों आदेश दिया कि वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए
ले जाएँ।

16 पिलातुस के सैनिक यीशु को उस महल के आंगन में ले गए
जहाँ पिलातुस रहता था। वह स्थान सरकारी मुख्यालय था।
तब उन्होंने सैनिकों के पूरे दल को बुलवा लिया जो वहाँ तैनात
थे।

17 जब सब सैनिक एक साथ इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने यीशु
को एक बैंगनी लबादा पहना दिया। उसके बाद उन्होंने उसके
सिर पर एक मुकुट रखा, जिसे उन्होंने कंटीली झाड़ियों की
टहनियों से बुना था। {उन्होंने इन कामों को उसका उपहास
करने और इस बात का ढोंग करने के लिए किया कि वे उसे
राजा समझते हैं।}

18 तब फिर से उसका उपहास करने के लिए उन्होंने उसे यह
कहकर ऐसे नमस्कार किया जैसे वे किसी राजा को नमस्कार

करते हैं, “उस राजा की जय हो, जो यहूदियों पर शासन करता है!”

19 उन्होंने एक भारी सरकंडे से उसके सिर पर बार-बार मारा, और उस पर थूका। उसका सम्मान करने का ढोंग करने के लिए वे उसके सामने घुटने टिकाकर बैठ गए।

20 जब वे उसका उपहास करना समाप्त कर चुके, तो उन्होंने उसका बैंगनी लबादा उतार लिया। उन्होंने उसे उसके ही कपड़े पहना दिए, और फिर वे उसे क्रूस पर ठोंकने के लिए नगर के बाहर ले गए।

21 जब यीशु अपना क्रूस उठाकर थोड़ी दूर गया, तो कुरेनी नगर का रहने वाला शमौन नाम का एक व्यक्ति आया। वह सिकंदर और रुफुस का पिता था। जब वह अपने घर को लौट रहा था तो वह नगर के बाहर से होकर जा रहा था। सैनिकों ने शमौन को यीशु की सहायता करने के लिए क्रूस उठाने हेतु विवश किया, क्योंकि यीशु के साथ उनके द्वारा किए गए सारे बुरे बर्तावों से वह थक गया था।

22 सैनिक उन दोनों को एक स्थान पर लेकर गए जिसे वे गुलगुता कहते थे। उस नाम का अर्थ है, “खोपड़ी का स्थान।”

23 फिर उन्होंने यीशु को गंधरस नाम की दवा मिला हुआ दाखरस देने का प्रयास किया, परन्तु उसने वह पीने से इन्कार कर दिया।

24 कुछ सैनिकों ने उसके कपड़े ले लिए। फिर उन्होंने उसे क्रूस पर ठोंक दिया। उसके बाद, उन्होंने उसके कपड़ों के लिए पासे जैसे किसी वस्तु से जुआ खेलकर आपस में उसके कपड़ों को बांट लिया। उन्होंने ऐसा इस बात को निर्धारित करने के लिए किया कि किस जन को कपड़े का कौन सा टुकड़ा मिलेगा।

25 जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया तब सुबह के नौ बजे थे।

26 उन्होंने क्रूस पर यीशु के सिर के ऊपर एक दोषपत्र लगाया जिस पर किसी व्यक्ति ने यह लिखा था कि वे उसे क्रूस पर क्यों चढ़ा रहे हैं। उस पर लिखा था, “यहूदियों का राजा।”

27 उन्होंने दो अन्य बंदियों को भी जो डाकू थे, दूसरे क्रूसों पर ठोंक दिया। उन्होंने एक को यीशु की दाईं ओर क्रूस पर और एक को यीशु की बाईं ओर क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया।

28 [और उसे डाकुओं के साथ क्रूस पर चढ़ाकर उन्होंने पवित्रशास्त्र का वह अनुच्छेद पूरा कर दिया, जो कहता है, ‘और उन्होंने उसे दुष्ट लोगों में से समझा।’]

29 वहाँ से आने-जाने वाले लोगों ने उस पर अपने सिर हिला-हिलाकर उसका अपमान किया। उन्होंने कहा, “वाह! तूने तो कहा था कि तू मंदिर को ढा कर उसे फिर से तीन दिन में बना देगा।

30 यदि तू ऐसा कर सकता है, तो क्रूस पर से उतरकर स्वयं को बचा!”

31 यहूदी व्यवस्था सिखाने वाले मनुष्यों के साथ प्रधान याजक भी यीशु का उपहास करना चाहते थे। इसलिए वे एक दूसरे से कहने लगे, “लोग दावा करते हैं कि इसने दूसरों को परेशानी से छुड़ाया था, परन्तु यह तो स्वयं को भी नहीं बचा सकता!

32 इसने मसीह होने का और इस्राएली लोगों पर शासन करने वाला होने का दावा किया था। यदि इसकी बातें सच होती, तो इसे अब क्रूस पर से उतर आना चाहिए! तब हम इसका विश्वास करेंगे!” उसकी दोनों ओर जिन दो व्यक्तियों को क्रूस पर ठोंका गया था उन्होंने भी उसे अपमानित किया।

33 दोपहर होने पर सारे देश में अंधियारा छा गया, और दोपहर के तीन बजे तक अंधकार छाया रहा।

34 तीन बजे यीशु ने पुकारकर कहा, “इलाई, इलाई, लमा शबक्तनी?” जिसका अर्थ है, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

35 वहाँ खड़े लोगों में से कुछ ने जब ‘इलाई’ शब्द सुना, तो उन्होंने इसे गलत समझा और कहा, “सुनो! वह एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को पुकार रहा है!”

36 उनमें से एक भागकर गया और खट्टे दाखरस से एक जुफा को भर लिया। उसने उसे सरकंडे की नोक पर रखा, और फिर उसे ऊपर उठाया ताकि यीशु को उसमें का दाखरस

चूसने का प्रयास करने के लिए कहे। जिस समय वह ऐसा कर ही रहा था, तो किसी ने कहा, "प्रतीक्षा करो! देखते हैं कि एलिय्याह उसे क्रूस पर से उतारने के लिए आता है या नहीं!"

37 और फिर, यीशु के ऊँचे स्वर में चिल्लाने के बाद, सांस लेना बंद कर दिया और मर गया।

38 उसी क्षण, वह भारी, मोटा पर्दा, जो मंदिर के परम पवित्र स्थान को बंद करता था, ऊपर से लेकर नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया।

39 वह सूबेदार यीशु के सामने ही खड़ा था जो यीशु को क्रूस पर ठोंकने वाले सैनिकों की निगरानी करता था। जब उसने देखा कि यीशु कैसे मरा था, तो उसने कहा, "निश्चित रूप से, यह यीशु परमेश्वर का ही पुत्र था!"

40 वहाँ कुछ स्त्रियाँ भी थीं, जो इन घटित होने वाली बातों को दूर से ही देख रही थीं। वे उस समय यीशु के साथ ही थीं, जब वह गलील जिले में था, और जिन वस्तुओं की उसे आवश्यकता थी वे उन्होंने ही उसे उपलब्ध करवाई थीं। वे और अन्य बहुत सी स्त्रियाँ, उसके साथ यरूशलेम नगर में आई थीं। उन्हीं स्त्रियों में से एक मगदला नगर की रहने वाली मरियम भी थी। एक और मरियम थी, जो छोटे याकूब और योसेस की माता थी। वहाँ सलोमी भी थी।

42 जब शाम होना निकट ही था, तो अरमतिया नामक नगर का रहने वाला यूसुफ नाम का एक पुरुष वहाँ आया। वह यहूदी महासभा का एक ऐसा सदस्य था, जिसका सब लोग आदर किया करते थे। वह उन लोगों में से भी था जो उत्सुकता से उस समय की प्रतीक्षा कर रहे थे जब परमेश्वर अपने राजा को शासन करना आरम्भ करने के लिए भेजेगा। {वह जानता था कि यहूदी व्यवस्था के अनुसार, जिस दिन किसी व्यक्ति की मृत्यु हुई हो, उसके शव को उसी दिन गाड़ा जाना चाहिए। उसे यह भी मालूम था कि यह तैयारी का दिन था, जिसमें लोग यहूदी विश्रामदिन के लिए सामानों को तैयार करते थे, और यह कि सूर्य के अस्त होते ही यहूदियों का विश्रामदिन आरम्भ हो जाएगा।} अब शाम होने वाली थी। अतः साहस करके वह पिलातुस के पास गया, और उससे यीशु के शव को क्रूस से नीचे उतारकर उसे तुरन्त गाड़ने की अनुमति मांगी।

44 जब पिलातुस ने यह सुना कि यीशु मर गया है, तो वह अचम्भित हो गया। इसलिए उसने उस सूबेदार को बुलाया जो यीशु को क्रूस पर चढ़ाने वाले सैनिकों के ऊपर प्रभारी था, और उसने उससे पूछा कि क्या यीशु मर चुका है।

45 जब उस सूबेदार ने पिलातुस को बताया कि यीशु मर गया है, तो पिलातुस ने यूसुफ को शव ले जाने की अनुमति दे दी।

46 जब यूसुफ ने एक सनी का वस्त्र मोल ले लिया, तब उसने तथा दूसरे लोगों ने यीशु के शव को क्रूस पर से उतार लिया। उन्होंने उसे सनी के वस्त्र में लपेटा और एक कब्र में रख दिया जिसे पहले से ही एक चट्टान में से काट कर बनाया गया था। उसके बाद उन्होंने उस कब्र के प्रवेशद्वार के सामने एक बड़ा सपाट पत्थर लुढ़का दिया।

47 मगदला की रहने वाली मरियम और योसेस की माता मरियम देख रहे थे कि उन्होंने यीशु के शव को कहाँ रखा है।

Mark 16:1

1 शनिवार की शाम को जब यहूदियों का विश्रामदिन समाप्त हो गया, तब मगदला की रहने वाली मरियम, छोटे याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने यीशु के शव का अभिषेक करने के लिए सुगंधित लेप मोल लिए। {ये स्त्रियाँ यहूदियों की इस गाड़े जाने की प्रथा का पालन करना चाहती थीं}।

2 सप्ताह के पहले दिन, रविवार को बड़ी भोर में, सूर्य निकलने के तुरन्त बाद, वे स्त्रियाँ सुगंधित लेप लेकर कब्र पर गईं।

3 मार्ग में वे एक दूसरे से पूछ रही थीं, "कब्र के द्वार को बंद करने वाले उस भारी पत्थर को लुढ़काने में हमारी सहायता कौन करेगा?"

4 वहाँ पहुँचकर उन्होंने दृष्टि उठाई और वे यह देखकर अचम्भित रह गईं कि किसी ने उस पत्थर को लुढ़का दिया है, क्योंकि वह बहुत बड़ा था।

5 उन्होंने कब्र में प्रवेश करके एक जवान पुरुष को देखा। उसने सफेद वस्त्र पहना हुआ था और वह गुफा में दाईं ओर बैठा हुआ था। इस दृश्य ने उन्हें भयभीत कर दिया!

6 उस जवान पुरुष ने उनसे कहा, "भयभीत न हों! मैं जानता हूँ कि तुम नासरत के रहने वाले उस मनुष्य यीशु को ढूँढ़ रही हो, जिसे उन्होंने क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया था। परन्तु वह फिर से जीवित हो गया है! वह यहाँ नहीं है! देखो! यही वह स्थान है जहाँ उन्होंने उसके शव को रखा था।

7 परन्तु, यहीं ठहरने के बजाए, जाकर उसके चेलों को बताओ! विशेष रूप से, निश्चय ही तुम पतरस को बताना। उनसे कहो, 'यीशु तुमसे पहले गलील जिले को जा रहा है, और जैसा उसने तुमसे पहले ही कह दिया था, कि तुम उससे वहाँ मिलोगे'।"

8 वे स्त्रियाँ बाहर निकलकर कब्र पर से भाग गईं। वे काँप रही थीं क्योंकि वे डरी हुई थीं, और वे विस्मित थीं। परन्तु उन्होंने इस विषय में किसी से कुछ इसलिए नहीं कहा, क्योंकि वे डरी हुई थीं।

9 [सप्ताह के पहले दिन, रविवार की सुबह भोर में, जब यीशु फिर से जीवित हो गया, तब वह सबसे पहले मगदला नगर की रहने वाली मरियम को दिखाई दिया। यह वही स्त्री है जिसमें से उसने बीते समय में सात दुष्टात्माओं को निकाला था।

10 वह उन लोगों के पास गई जो यीशु के साथ थे, उस समय पर वे विलाप कर रहे थे और रो रहे थे। जो उसने देखा था वह उसने उनको बता दिया।

11 परन्तु जब उसने उनको बताया कि यीशु फिर से जीवित हो गया है और उसने उसे देखा है, तो जो उसने कहा था उन्होंने उस बात पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया।

12 उसी दिन बाद में, यीशु अपने दो चेलों को दिखाई दिया, जब वे यरूशलेम से अपने घरों को आसपास के क्षेत्र में जा रहे थे। वे उसे शीघ्रता से पहचान नहीं पाए क्योंकि वह बहुत अलग दिख रहा था।

13 {जब वे उसे पहचान गए,} तो वे दोनों यरूशलेम को लौट गए। जो कुछ घटित हुआ था वह उन्होंने उसके अन्य अनुयायियों को बताया, परन्तु जो बात उन्होंने सुनी उस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया।

14 बाद में यीशु उन ग्यारह चेलों को उस समय दिखाई दिया जब वे भोजन कर रहे थे। उसने उन्हें कड़ाई से डांटा, क्योंकि उन्होंने उन लोगों की बातों पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया था जिन्होंने उसे फिर से जीवित होने के बाद देखा था।

15 उसने उनसे कहा, "तुम समूचे संसार में जाकर सब लोगों में शुभ संदेश का प्रचार करो!

16 जो कोई तुम्हारे संदेश पर विश्वास करता है और जो बपतिस्मा लेता है, परमेश्वर उन सब का उद्धार करेगा। परन्तु जो कोई भी तुम्हारे संदेश पर विश्वास नहीं करता, परमेश्वर उसे दोषी ठहराएगा।

17 जो लोग शुभ संदेश पर विश्वास करते हैं वे चमत्कारों को करेंगे। विशेष रूप से, मेरी सामर्थ्य के द्वारा वे लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। वे उन भाषाओं में बात करेंगे जो उन्होंने नहीं सीखी हैं।

18 जब वे किसी साँप को उठा लेंगे या कोई विषैला तरल पदार्थ पी लेंगे, तौभी उनको हानि नहीं होगी। जिन बीमार लोगों पर वे अपने हाथ रखेंगे उनको परमेश्वर चंगा करेगा।"

19 जब प्रभु यीशु अपने चेलों से यह बातें कह चुका, उसके बाद परमेश्वर ने उसे स्वर्ग पर उठा लिया। तब यीशु परमेश्वर की दाईं ओर अपने सिंहासन पर बैठ गया, जो उसके साथ राज्य करने के लिए सर्वोच्च प्रतिष्ठा का स्थान है।

20 और चेले यरूशलेम से निकलकर सब स्थानों में प्रचार करने लगे। जहाँ कहीं भी वे गए, प्रभु ने उन्हें चमत्कार करने में सक्षम किया। ऐसा करके उसने लोगों पर प्रकट किया कि परमेश्वर का संदेश सच्चा है।]